AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER NOVEMBER 2021

Hail! King of the kings.

हे खीस्त राजा, तेरा राज्य आए!

Archdiocese at a Glance

Sacerdotal Ordination (31 Oct. 21) Agra

First Mass: Frs. Ajay & Babin, Kanyakumari

Thanksgiving Mass, Fr. Justin, Noida

New Priests in SLS, Agra

H.E. Cardinal Oswald in Agra

Synod Logo unveiled

9th Anniversary of 2012 Batch

Silver Jubilarian Sr. Sabina, Kosikalan

Career Guidance Camp held

World Mission Sunday celebrated, Cathedral, St. Patrick's & MVP, Agra

Editorial

प्रिय मित्रों, **अग्रेडियन्स** का नवम्बर महीने का विशेषांक आपके हाथों में है। आशा है कि आपको पसन्द आयेगा। **अग्रेडियन्स** पत्रिका का यह प्रयास रहता है कि कम से कम पृष्ठों में अधिक से अधिक पठनीय सामग्री आप तक पहुँच सके - दुर्भाग्य है कि आज कलीसिया में अच्छे लेखक नहीं मिलते हैं। उससे भी दयनीय स्थिति है पाठकों की - लालटेन जलाकर ढूँढने से भी नहीं मिलते। लगता है अपने यहाँ पाठकों की प्रजाति प्राय: लुप्त होती जा रही है।

अब ऐसा भी नहीं है कि हम सभी अनपढ़-गंवार हैं या लिखना-पढ़ना नहीं जानते... लिखते तो बहुत हैं - प्राय: व्हाट्स ऐप मैसेज पढ़ते हैं, अब कितना पढ़ते हैं, यह भी हम भलीभाँति जानते हैं, क्योंकि प्राय: पूरा मैसेज पढ़े बिना हम दूसरों को फारवर्ड कर देते हैं ताकि किसी का तो भला हो जाये... कितनी सेवा भावना है हम में!

हम परमपिता ईश्वर को धन्यवाद देते हैं अक्टूबर-नवम्बर महीनों के लिए - राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत घटनाएं हुई हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी रोम में जी-20 मीटिंग में भाग लेने गए। वहाँ बहुत से राष्ट्राध्यक्षों से भेंट की। लगे हाथों संत पिता फ्रांसिस से भी मिल लिये। मीडिया ने इस मिलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। **अग्रेडियन्स** भी अपने प्रधानमंत्री जी की इस पहल पर हार्दिक बधाई देती है और उनके इस प्रयास और कदम को भविष्य के लिए एक सार्थक प्रयत्न के रूप में इसकी सराहना करती है। न केवल राजनीतिक स्तर पर किन्तु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्तर पर भी हमारे रिश्तों में प्रगाढ़ता आयेगी।

संत पिता फ्रांसिस की हार्दिक इच्छानुसार सिनड (धर्मसभा) 2021-2023 से समस्त कलीसिया को बहुत आशा है। संत पिता ने इसमें सक्रिय भाग लेने के लिए सभी वर्गों (धर्मसंघियों, लोकधर्मियों और युवाजनों) को आमंत्रित किया है। संत पिता इस धर्मसभा को लेकर बहुत गंभीर और आशान्वित भी हैं। प्रभु उनके माध्यम से हमसे बात करे और हमारा मार्गदर्शन करे। इस धर्मसभा को लेकर आम ख्रीस्तीय जन भी बहुत उत्साहित हैं। यह धर्मसभा कैसी होगी? इसके क्या परिणाम होंगे? आदि। समय आने पर पवित्रात्मा हमें सब कुछ समझा देगा, कि हमें क्या कहना-सुनना है।

हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने हमारे महाधर्मप्रांत को फादर्स अजय, बबिन और जस्टिन अगस्टिन के रूप में तीन नए पुरोहित दिए हैं। फादर जस्टिन माटी के लाल या धरती पुत्र हैं। वे नोएडा पल्ली से हैं। अब हम 81 हो गए हैं। अभिषेक से पूर्व अग्रेडियन्स को दिए गए एक विशेष लिखित साक्षात्कार में तीनों ने मिशनरी पुरोहित बनकर दीन-दुखी, दलित और शोषित लोगों की सेवा करने की बात कही है... आगे भगवान मालिक है। महाधर्मप्रांत में अभी तीन उपयाजक और हैं - कुलकान्त, सचित एवं असीम, जिनका अभिषेक अगले वर्ष सम्पन्न होगा।

महाधर्मप्रांत की कुछ पल्लियों में **विश्व मिशन रविवार** धूमधाम से मनाया गया। जबकि कुछ पल्लियों में हमेशा की भांति इस बार भी कुछ नहीं किया गया। जहाँ चाह, वहाँ राह है।

अति श्रद्धेय कार्डीनल ओस्वाल्ड ग्रेशियस के तीन दिवसीय अनायास दौरे ने हम सबको आश्चर्यचकित कर दिया। उनके आगरा आगमन से महाधर्मप्रांत धन्य हो गया। हम सभी उनके गिरते स्वास्थ्य को लेकर बहुत चिंतित हैं। प्रभु उनको पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्रदान करे ताकि वे अपनी सभी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा सकें।

विभिन्न कार्यक्रमों की झड़ी में इस वर्ष बाल दिवस प्राय: लुप्त ही हो गया। इस वर्ष यह दिन रविवार को था इसलिए भी इसकी चमक बहुत फीकी सी रही।

महाधर्मप्रांत के युवा आयोग के तत्वावधान में 14 सितम्बर को ही आगरा में एक केरियर गाइडेन्स कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सौ से अधिक युवक-युवतियों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभाओं को पहचाना।

इसी महीने 21 तारीख को हम **ख्रीस्त राजेश्वर का महापर्व** मनाने वाले हैं। हम उसके राज्य के नागरिक / प्रतिनिधि बनने का प्रयास करें।

28 तारीख से **नया पूजन वर्ष** शुरु हो रहा है। आप सभी लेखकों, पाठकों को अग्रेडियन्स की हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रभु में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

SHEPHERD'S VOICE

Christ, the Universal King

This year the feast of Christ the King falls on 21 November. Customarily we celebrate this feast at the diocesan level with a solemn holy Mass and a procession through the city roads in the company of Jesus. Since the pandemic-related restrictions have not yet been fully lifted, this year's celebration will be at the parish level. A few random thoughts might help you celebrate this solemnity meaningfully.

It is well known that this feast was introduced through the encyclical Quas Primas (In the first) of Pope Pius XI on 11 December 1925. One of the purposes of the encyclical was to give hope to a world which was on the point of despair. Another purpose was to present to the world a new idea of kingship and authority. Jesus Christ embodied that new model of kingship and authority.

Our Lord Jesus was an unusual king. Unlike other kings, he was not born in a royal palace but in a manger. He did not go to his people riding a horse, but a donkey's colt as it was foretold about him (Jn 12:15). He was a servant king, for he said, "I came not to be served but to serve" (MK 10:45). He came to give his life as a ransom for many. In his kingdom the first will be last and the last first. After the miracle of the loaves, people wanted to make him a king like the other kings but Jesus stoutly resisted their move (Jn 6:13).

To Pilate he explained the nature of his kingdom: "My kingdom is not of this world. If it were, my servants would fight to prevent my arrest by the Jewish leaders. But now my kingdom is from another place" (Jn 18:36). He does not rule by force or fear or domination, but with compassion and love. Remember how Jesus went to Jerusalem in order to heal the invalid waiting at Bethesda pool for 38 years (Jn 5:1-9) and to the village named Nain with the intention of raising the only son of a widow? Or the way he dealt with the woman caught in adultery (Jn 8:1-11)? He is the compassion of the Father that has become living and visible.

Jesus tells who can enter his kingdom, those who show love and compassion towards their fellow beings. Those who feed the hungry, give drink to the thirsty, welcome strangers, clothe the naked, take care of the sick and visit prisoners will inherit the kingdom.

Our celebration of this feast will become fruitful if we let God's kingdom come into our lives by obeying his commandment of love and following his teaching. Let us welcome Jesus

our King into our hearts, our homes and our families. Let us pray to him for the strength to oppose the darkness of injustice, corruption, exploitation, violence, immorality, etc., that prevail around us. May he grant each of us the grace to deny oneself, take up the cross and follow his way! Let us be effective witnesses of the Gospel and extend the reign of God everywhere. I wish you a Happy Feast of Christ the King!

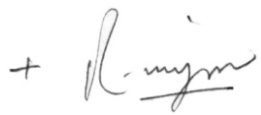

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

ख्रीस्त राजेश्वर का महापर्व

इस वर्ष राजाओं के राजा, ख्रीस्त राजेश्वर का महापर्व रविवार 21 नवम्बर को मनाया जायेगा। विगत कई वर्षों से हम प्रथानुसार इस महापर्व को महाधर्मप्रांतीय स्तर पर मनाते आ रहे हैं, जब समारोही पवित्र ख्रीस्तयाग (मिस्सा बलिदान) चढ़ाया जाता है, प्रभु येसु को पवित्र साक्रामेण्ट (परमप्रसाद) के रूप में लेकर आगरा शहर की कुछ प्रमुख सड़कों पर एक शोभायात्रा या जुलूस निकालते हैं। चूँकि अभी भी महामारी कोविड-19 से सम्बन्धित प्रतिबन्ध (रोक) पूरी तरह से हटाई नहीं गई है इसलिए इस वर्ष यह समारोह पल्ली स्तर पर ही मनाया जायेगा। इस महापर्व को योग्य रीति और अर्थपूर्ण रीति से मनाने के लिए कुछ सुझाव देना चाहता हूँ, आशा है, कि इनसे हमें कुछ सहायता मिलेगी।

यह बात सभी भलीभाँति जानते हैं, कि यह पर्व तत्कालीन संत पिता पियुस ग्यारहवें ने 11 दिसम्बर 1925 के माध्यम से प्रस्तावित एवं स्थापित किया था। उस प्रेरितिक पत्र का एक उद्देश्य यह भी था, कि तत्कालीन विश्व को, जो कि निराशा के दलदल में डूब रहा था, आशा की एक किरण देना था। एक अन्य उद्देश्य था, कि दुनिया के सामने राजत्व और अधिकार का एक नया रूप प्रकट करना। येसु ख्रीस्त ने राजत्व और अधिकार का वह नया आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया।

हमारे प्रभु येसु एक अलग ही प्रकार के राजा थे। वह दुनिया के अन्य राजाओं की भांति किसी राजमहल में नहीं, बल्कि एक गौशाला (चरनी) में जन्मे थे। वह अपने लोगों से भेंट करने किसी घोड़े पर सवार होकर नहीं, किन्तु गदही के बछड़े पर बैठकर गए, जैसा कि उनके विषय में वर्षों पूर्व भविष्यवाणी की गई थी (योहन 12:15) वह एक सेवक-राजा थे। उन्होंने कहा था, सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने आया हूँ। (मारकुस 10:45) वह अपना जीवन बहुतों के उद्धार के लिए अपना जीवन देने आए थे। उनके राज्य में अन्तिम पहला होगा और पहला व्यक्ति अन्तिम होगा। रोटियों के चमत्कार के बाद जनता उन्हें अन्य राजाओं की भांति एक राजा बनाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने दृढ़तापूर्वक उनके इरादों और प्रयासों को विफल कर दिया, इसलिए वे फिर अकेले ही पहाड़ी पर चले गए। (योहन 6:15)

उसने पिलातुस को राजत्व का सही अर्थ समझाया; ''मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे सेवक नहीं हैं। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे सेवक (अनुयायी)

यहूदी नेताओं द्वारा मुझे गिरफ्तार करने से रोकते। मैं यहूदियों के हवाले नहीं किया जाता। परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं है। (योहन 18:36)

वह शक्तिबल या भय दिखाकर अथवा अधिकार जताकर नहीं, किन्तु करूणा और प्रेम से शासन करता है। याद कीजिए कि किस प्रकार प्रभु ईसा अड़तीस वर्षों से बीमार व्यक्ति को चंगा करने येरूसालेम के बेथेस्दा के कुण्ड जाते हैं। वे किस प्रकार नाईन नामक गाँव जाते हैं, विधवा के एकलौते पुत्र को जीवन देने के लिए? उन्होंने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ किस प्रकार व्यवहार किया? (योहन 8:1-11)। प्रभु ईसा पिता की करूणा है, जो जीवित और दृश्य रूप में प्रकट हुई है।

येसु हमें बताते हैं, कि कौन उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं- वे जो दूसरों के प्रति प्रेम और करूणा दिखाते हैं। जो भूखों को भोजन कराते, प्यासों को पानी पिलाते, अजनबियों और परिचितों का स्वागत करते, नंगों को वस्त्र पहनाते, बीमारों की सेवा-सुश्रुषा करते, कैदियों से भेंट करने जाते हैं - वे ही स्वर्गराज्य प्राप्त करेंगे।

हमारा यह पर्व - समारोह तभी फलदायक बनेगा, जब हम प्रेम की आज्ञा की पालन करेंगे और उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात कर उनका अनुसरण करेंगे। आइए, हम अपने दिलों, घरों और परिवारों में येसु, हमारे राजा का स्वागत करें। हम उससे प्रार्थना करें कि वह हमें शक्ति प्रदान करे कि हम अपने चारों ओर फैले अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण, हिंसा, अनैतिकता आदि के अन्धकार को दूर कर सकें। हम प्रार्थना करें कि वह हमें ऐसी कृपा दे कि हम आत्मत्याग करें, अपना क्रूस उठाकर उसके मार्ग पर चलकर उसका अनुसरण कर सकें। हम सुसमाचार के प्रभावशाली साक्षी बनें और उसके राज्य को सर्वत्र फैला सकें। मैं आप सबको ख्रीस्त राजा, राजेश्वर के महापर्व की शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि** (आगरा के महाधर्माध्यक्ष)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (NOVEMBER, 2021)

3	Meeting at St. Joseph's School, G. Noida
4	Meeting
5	Meeting
6	Jubilee Mass: St. Theresa's Church, Kosi Kalan
7	Holy Mass: Confirmation, St. Mary's Church, Noida & Retreat
8	Retreat
9	Retreat
10	Retreat
11	Retreat
12	Retreat & Holy Mass: Holy Communion & Confirmation, St. Anthony's Church, Khoda
13	Golden Jubilee Celebration: Christ the King School Inter College, Tundla
14	Holy Mass: Holy Communion & Confirmation, St. Joseph's Church, G. Noida
15	Journey to Allahabad
16	ARBC Meeting
17	ARBC Meeting
18	ARBC Meeting
19	Return
21	Christ the King Celebration: at Cathedral, Agra
22	Visit to St. Lawrence Seminary, Agra
24	Holy Mass: FCC Provincial House, Noida
25	Jubilee Celebration: Holy Mass, M.C. Convent, Aligarh
29	Inauguration of Jubilee Year, Hathras

SYNOD 2021-2023: 'INVITATION TO LISTEN'

"A Synodal Church is a Church which listens," emphasized Pope Francis, while specifying the goal of the Synod 2021-2023. He said that the two-year process leading to the 2023 Synod on 'synodality' is not about "gathering opinions," "not an inquiry", but "listening to the Holy Spirit."

"The Holy Spirit", he said, "knows no boundaries and parishes should therefore be open to all and not limit themselves to considering only those who attend or think like you.""Allow everyone to enter... Allow yourselves to go out to meet them and allow yourselves to be questioned, let their questions be your questions, allow yourselves to walk together: the Spirit will lead you, trust the Spirit. Do not be afraid to enter into dialogue and allow yourselves to be disturbed by the dialogue: it is the dialogue of salvation," he said.

Concluding his address, Pope Francis urged the faithful to play an active role in the Synod's preparations."I encourage you to take this Synodal process seriously and to tell you that the Holy Spirit needs you. And this is true: the Holy Spirit needs us. Listen to him by listening to each other. Don't leave anyone out or behind," he said.He added: "But it is necessary to get out of the 3-4% that represents those closest to us, and go beyond that to listen to the others, who will sometimes insult you, they will chase you away, but it is necessary to hear what they think, without wanting to impose our things: let the Spirit speak to us."

The other day, one of my friends just began to speak something over an issue that was bit uncomfortable for me, and I immediately got into a reactive mode that completely shut her down. Later, I realized that I had blocked the Holy Spirit from speaking to me that day through that unpleasant topic. Friends, this is the way, quite often in our lives, we REFUSE TO LISTEN to the divine interventions that most often come in disguise, and thus we block our own healing and growth!

Now it is an established psychological fact that our mind has very clever ways to censor what we hear: it makes us hear that which fits with us; it lets anything that is not fitting with our conditioning slip by, it does not take it in.

Synod 2021-2023 is inviting us TO LISTEN!The interpretations of our mind should not hinder what is being said from reaching our heart. The mind is blind. It cannot see, it can only grope in the dark. Groping in the dark is called 'thinking'.

True listening requires certain maturity, openness to understanding values and points of view very different from our own. When we really listen, our own ideas and values are sometimes altered. Therefore, listening is considered a spiritual quality. It is called 'shravana', or right listening. Right listening requires deep silence in the heart. And once we learn that, the whole existence becomes a mystery, a poetry, a song, a dance… gone are the days of misery, anguish, tension, death…and we have entered on the path of eternal benediction!

Let us ask ourselves frankly during this Synodal process: Are we good at listening? How good is the "hearing" of our heart?

May we participate in this Synod, placing ourselves on the same path as the Word made flesh…following in His footsteps, listening to His Word along with the words of others!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

Synod: 2021 - 2023
Communion, Participation and Mission

The entire Catholic Church is called to participate in the upcoming Synod of Bishops! This Synod is entitled: "For a Synodal Church: Communion, Participation, and Mission."

Pope Francis has called the entire People of God to journey together. This Synod is not just another meeting with oral presentations and written reports. This Synod is a process of journeying together by listening, dialoguing, praying, discerning and making decisions together for the purpose of proclaiming the Gospel.

Pope Francis is asking each local diocese to gather - clergy, religious and laity together- to listen to each other. The "goal" of this journeying together is not to create a new vision or pastoral plan with objectives. Rather, the goal of our journeying together is to be present with one another, to listen and learn with each other, and to grow closer to the Lord and His Church.

What does the word Synod mean?

Synod is a greek word (synodos) meaning a meeting or assembly. The two Greek words that make up synod are syn meaning together and hodos meaning way or journey.

What is the Synod of Bishops?

A helpful short definition of the Synod of Bishops is a gathering of Bishops that:

1. fosters closer unity between the Bishops and Pope.

2. provides counsel to the Pope on matters of faith and morals, and discipline of the Church.

3. studies questions concerning the Church in the world (c.f. Code of Canon Lawc. 342).

Voting in the Synod of Bishops is limited to Bishops present at the Synod gathering. However, Clergy, Men and Women, Religious, Theologians, Catechists, Canon lawyers, and Lay Experts all participate in the Synod gathering with Bishops by providing their counsel.

What is Synodality?

Synodality and the synodal process are not a gathering or meeting of Bishops, nor are they the administrative arms of the Church. Rather, Synodality is the path and process of the Church as communion. It is the communion of all the baptized who are listening to each other, dialoguing with each other and praying together to hear the voice of Holy Spirit as we all seek holiness and proclaim the Gospel. Synodality involves Clergy, Religious and Laity listening and speaking, praying and discerning together, and placing the hopes and concerns of the People of God at the foot of the Bishops, who, united with the Pope, decide matters of faith and morals in order to preserve the faith and strengthen the Church throughout the world.

Contd. on Pg. 8

मिलिए अपने नये पुरोहितों से -
फादर्स अजय, बबिन और जस्टिन का जीवन परिचय

श्रद्धेय फादर जे. अजय फ्रांस्टन का जन्म पहली जनवरी को श्री जोसफ अन्थोनी और श्रीमती अमलोरपवम के एक अत्यन्त धार्मिक परिवार वानियाकुड़ी, कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में हुआ था।

आपके परिवार में आपसे बड़े एक भाई और एक छोटी बहन है। बचपन से ही आप अपनी पल्ली में मिस्सा बलिदान के समय वेदी सेवक के रूप में प्रभु की निकटता में रहे। वहीं से आपको प्रभु का एक मिशनरी पुरोहित बनने की प्रेरणा मिली।

इस प्रकार श्रद्धेय फादर एस. बबिन रायसन का जन्म 29 मई 1993 को श्री सूसै वरीद एंव श्रीमती मरिया डोरा के परिवार में चौथे पुत्र के रूप में सेंट जेम्स चर्च वानियाकुड़ी, कन्याकुमारी (तमिलनाडु) में हुआ था। आपके परिवार में आपसे बड़े तीन भाई हैं। आपकी और उपयाजक अजय की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा सेंट जेम्स हाई स्कूल, वानियाकुड़ी में हुई। आप दोनों में पुरोहित बनने की तीव्र अभिलाषा थी। इसी कारण से आपके पल्ली पुरोहित ने आप दोनों को सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर मिशन होम, नागरकोईल में भेज दिया। यहीं रहकर आपने कार्मेल स्कूल से इण्टरमीडिट तक शिक्षा प्राप्त की।

इसके बाद आप दोनो ने वर्ष 2010 में आगरा महाधर्मप्रांत में सेंट लारेन्स सेमीनेरी में प्रवेश लिया। दो वर्ष की पढ़ाई के बाद आप दोनों को आध्यात्मिक निर्देशन और दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर भेजा गया। फिलॉसफी पढ़ने के बाद ब्रदर अजय ने निष्कंलक माता चर्च और स्कूल, जैत (मथुरा) में एक वर्ष की रीजेन्सी फादर जेकब के निर्देशन में की, तो वहीं ब्रदर बबिन ने सेंट माईकल चर्च, अनूपनगर में फादर शिजु के मार्गदर्शन में तथा छः महीने फादर जोस अक्कारा के निर्देशन में सावियो नवजीवन बाल भवन, अलीगढ़ में रीजेन्सी पूरी की। रीजेन्सी पूरी कर लेने के बाद दोनों छात्रों को ईश शास्त्र के अध्ययन के लिए प्रयागराज की सेंट जोसफ प्रान्तीय सेमीनेरी में भेजा गया। वहाँ चार वर्ष के ईशशास्त्र अध्ययन के बाद प्रयागराज के तत्कालीन धर्माचार्य डा. राफी मंजलि द्वारा आपका उपयाजकीय अभिषेक सम्पन्न हुआ। ब्रदर अजय ने होली रोज़री चर्च, बस्तर में फादर जोसफ पिण्डीकनाइल के निर्देशन में तथा ब्रदर बबिन ने सेंट माईकल चर्च, अनूपनगर में उपयाजकीय सेवा प्रदान की।

डीकन जस्टिन अगस्टिन का जन्म 9 जून 1992 को सेंट मेरीज़ चर्च, नोएडा में श्री अगस्टिन एंव श्रीमती अन्तोनिया के एक धार्मिक एवं प्रभु के भय में बढ़ने वाले परिवार में दूसरे भाई के रूप में हुआ। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा असीसी कॉन्वेण्ट स्कूल, नोएडा से तथा निष्कंलक माता विद्यालय, जैत (मथुरा) से प्राप्त की। आपने हाई स्कूल एंव इण्टमीडिएट रटौल (मेरठ धर्मप्रांत) से किया। बचपन से ही आपका सपना था - प्रभु का एक पुरोहित बनकर प्रभु की और उसके लोगों की सेवा करना। आगरा के स्वर्गीय फादर जॉनसन से आपको पुरोहित बनने की प्रेरणा मिली। आपने वर्ष 2010 में आगरा की सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी में प्रवेश लिया।

दर्शनशास्त्र की पढ़ाई मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर से पूरी करने के बाद आपने फादर जोस अक्कारा के निर्देशन में साविियो बाल भवन, अलीगढ़ में एक वर्ष की रीजेन्सी की। तत्पश्चात् ईशशास्त्र की पढ़ाई के लिए आपको सेंट जोसफ सेमीनेरी, इलाहाबाद (प्रयागराज) भेजा गया। आपने उपयाजक अभिषेक के बाद उपयाजकीय सेवाएं पुनः अलीगढ़ तथा सेंट जूड पल्ली, कौलक्खा (आगरा) में दीं।

आगरा महाधर्मप्रांत आप तीनों उपयाजकों के अभिषेक से उत्साहित है। हमारी प्रार्थनाएं एवं शुभकामनाएं सदा आपके साथ हैं।

आगरा महाधर्मप्रांत के लिए यह बहुत सौभाग्य और गर्व की बात है कि आज धर्मप्रांत की माटी का चौथा लाल प्रभु की सेवा में वेदी पर अपने को अर्पित कर रहा है।

आज से 27 वर्ष पहले कथीड्रल पल्ली से फादर मून लाज़रस, फिर कुछ वर्ष बाद सेंट पैट्रिक्स पल्ली से पिलार समाज के लिए फादर क्रिस्टोफर मसीह, उनके बाद जैत (मथुरा) चर्च/पल्ली से ग्वालियर धर्मप्रांत के लिए फादर मरिया जॉनसन पुरोहित अभिषिक्त हुए हैं।

और अब चौथे धरती पुत्र सेंट मेरीज़ चर्च, नोएडा से श्रद्धेय जस्टिन अगस्टिन पुरोहित अभिषिक्त हुए।

प्रिय नव-पुरोहितों, आगरा धर्मप्रांत की माटी आपका हार्दिक अभिनन्दन करती है। प्रभु की वाटिका में आपका स्वागत है। अग्रेडियन्स की शुभकामनाएं सदा आपके साथ हैं। प्रभु हर मार्ग पर आपका मार्गदर्शन करे।

.....Continued from Pg. 6

What is different about this Synod?

This Synod is unique for two reasons. One, the Holy Father is asking that the entire Church to participate in this Synod. The faithful, clergy and religious are invited to pray, listen, and talk together with the Bishops before the 2023 gathering of Bishops in Rome. In our Archdiocese, we will pray, listen and talk with one another through parish listening sessions and Archdiocesan listening sessions.

Second, this Synod is a unique gift for our local Church. It is a gift of time - a chance to take a step back and reconnect with our parish communities. It is an opportunity to invite people not only back to Sunday Mass but also to parish life. This invitation to parish life starts with listening - listening to each other's joys, hopes, sorrows and anxieties. Listening to each other is the basis of dialogue, friendship and community life. This Synod is not about changing doctrine or church structures, but rather encountering each other as brothers and sisters in Christ in post-pandemic world.

The Designer of the Official Logo of the Synod 2021-2023

Isabelle de Senilhes is a French, lives in Paris. She is a freelance graphic designer and communications officer. A journalist who studied at the Ecole des Arts Decoratifs in Orleans and at the Ecole Estienne in Paris. Her professional activity started in 1997 with the Dominican Friars, during World Youth Day in Paris. A career marked by her encounters with Christian and humanitarian circles, Isabelle likes literature, photogrpahy, dance, interior design, art and heritage restoration.

Courtesy- Prophetic Voice (Nov. 2021)

O Death! Where is Thy Victory?

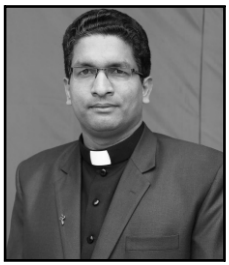

'O death, where is thy victory? O death, where is thy sting?' The sting of death is sin; and the power of sin is the law; but thanks be to God, who giveth us the victory through our Lord Jesus Christ [1 Cor. 5:5-57].

The month of November is dedicated to our dear departed. We remember and pray for the faithful departed and for the souls in purgatory. St. Padre Pio wrote to a spiritual daughter, "Even if your parents are in Heaven, we must always pray. If they no longer need prayers, they are applied to other souls". The best prayer we can say for the dear departed ones is to offer Holy Masses for them. Mother Church encourages the faithful to offer Holy Mass for them throughout November.

November is the end of the liturgical year too! Therefore, it is quite apt to meditate on the end time realities like reward and punishment, suffering and death, judgement, purgatory, heaven and hell, during this month!

Marcus Aurelius says, "As the separation of the soul from the body is the death of the body, so the separation of God from the soul is the death of the soul. And this death of the soul is the true death..."

Death is not the end of life, but another stage of life. Death is like a threshold to enter from one room to another. Most of us approach death with fear! The crucified Christ gives us Hope and frees us from the fear of death, because the cross of Christ stands as a symbol of victory over Death and Evil. Therefore, every death for us Christians is a moment of celebration rather than mourning and wailing!

Steve Job says: "No one wants to die. Even people who want to go to heaven don't want to die to get there. And yet, death is the destination we all share. No one has ever escaped it. And that is as it should be, because Death is very likely the single best invention of Life. It is life's change agent. It clears out the old to make way for the new".

Corazon Aquino's words are noteworthy. He says: "I would rather die a meaningful death , than to live a meaningless life". St. Gregory Palamas warns us saying, "It is not death that a man should fear, but he should fear never beginning to live".

St. Cyprian of Carthage's famous words should be borne in the mind of every Christian, "When once you have departed this life, there is no longer any place for repentance, no way of making satisfaction. Here, lie is either lost or kept. Here, by the worship of God and by the fruit of faith, provision is made for eternal salvation. Let no one be kept back either by his sins or by his years from coming to obtain salvation. To him who still remains in this world, there is no repentance that is too late".

Dear brothers and sisters, let us hold fast our Christian Hope that we will see Him face to face in the company of the angels and the saints in the next world, as we profess in the Creed:"I believe in the communion of saints, the forgiveness of sins, the resurrection of the body and the life everlasting".

– Fr. Vineesh Joseph Mathura

The Holy Father's Prayer Intention

NOVEMBER - 2021

Universal Intention - People Who Suffer from Depression: We pray that people who suffer from depression or burn-out will find support and a light that opens them up to life.

मृतकों की यादगारी का दिन

ऑल सॉल्ज़ डे - रूहों की ईद (2 नवम्बर)

'मृत्यु' कोई अनहोनी, भयावह, पीड़ा, अन्धकार व निराशा नहीं वरन मृत्यु नवजीवन का 'विशाल प्रवेश द्वार' है। मृत्यु एक सच्चाई है। इस संसार में जो आया है वह जायेगा भी। शरीर नाशवान है किन्तु आत्मा अविनाशी है।

2 नवम्बर विश्व के समस्त कैथोलिक ईसाई समाज के लिए अपने दिवंगत प्रियजनों को स्मरण करने, उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का दिन है। यह हमारे विश्वास पर आधारित है कि मृत्यु के समय शरीर त्यागते समय बहुत सी आत्माएं अपने विगत जीवन के पाप कर्मों की ईश्वर से क्षमा नहीं मांग पाती हैं। वे ईश राज्य में प्रवेश नहीं कर पाती हैं, उन्हीं आत्माओं को स्वर्ग राज्य में प्रवेश कराने के लिए इस दिन विश्वासीजन परमेश्वर से विशेष दया याचना करते हैं कि ये आत्मांए शुद्ध होकर ईश्वर की सहभागिता प्राप्त करें। ख्रीस्तीय मान्यतानुसार उन्हें भटकाव से मुक्ति मिले इसी कारण दिवंगत आत्माओं से सम्बन्धित जन इस विशेष अवसर पर उनकी समाधियों पर जाकर पुष्पांजलि चढ़ाते हैं। सुगन्धित द्रव्य, अगरबत्तियों, मोमबत्तियों से कब्रों को जगमगा कर उनसे क्षमा याचना करते हैं। उनके द्वारा अधूरे छोड़े गये कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेते हैं। उनके बताए सुमार्ग पर चलने का वचन देते हैं।

इस दिन बड़ी संख्या में ख्रीस्तीयों का कब्रों पर एकत्रित होना इस बात का संकेत है कि उन्हें भी कुछ वर्षों की अवधि के बाद यहीं आकर निवास करना है। वे सदा के लिए इस पृथ्वी पर नहीं रहेंगे। मनुष्य का यह विश्वास ही उसे ईश्वर से जोड़े रखता है। भजन संहिता 103 अध्याय के 15-16 पद में लिखा है- ''मनुष्य की आयु घास के फूल के समान होती है, वह मैदान में खिलता है, अपनी सुगन्ध बिखेरता है और शाम होते ही मुरझा जाता है। हवा का झोंका लगते ही ठहर नहीं पाता, वह पुनः फिर कभी अपने स्थान पर नहीं दिखता है।''

इतिहासकारों के अनुसार यह दिन सर्वप्रथम 998 ई. में क्लुंग के मठाधीश संत ओदीलिके द्वारा घोषित किया गया, जिसे फ्रांस के लोगों ने सहर्ष स्वीकार कर पर्व मनाने के लिए कब्रिस्तानों पर जाना प्रारम्भ किया था। कालान्तर में कैथालिक चर्च के लोग इसे विशेष दिन (2 नवम्बर) को एक पर्व के रूप में मनाने लगे।

'ऑल सॉल्ज़ डे' के विषय में लोगों की मान्यताएं भिन्न-भिन्न हैं। बहुतों के अनुसार इस दिन मृतक की आत्मा अपने प्रियजनों से मिलने आती है। ईसाई समाज में विशेषकर कैथोलिक पंथ में लोग इस दिन को विशेष भक्ति और श्रद्धा से मनाते हैं। ईसाइयों का निश्चित विश्वास है कि पुनर्जीवित प्रभु ईसा के समान उनका भी पुनरुत्थान होगा और वे कयामत के दिन अपने कर्मों का लेखा देने परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे। इन्हीं मान्यताओं के चलते वे 2 नवम्बर को अपने इष्टजनों की समाधि पर उनके लिए दुआएं मांगने जाते हैं।

वहाँ विशेष प्रार्थना (मृतकों के लिए मिस्सा) चढ़ायी जाती है। मिस्सा के पश्चात पुरोहितगण प्रत्येक कब्र पर पवित्र जल का छिड़काव कर उनको मुक्ति की आशीष प्रदान करते हैं।

बाईबिल की पुस्तक मक्काबियों के ग्रन्थ में इस दिन के लिए स्पष्ट लिखा है कि ''यदि मृतकों के पुनरुत्थान की आशा नहीं होती तो मृतकों के लिए प्रार्थना व्यर्थ और निरर्थक है। (2 मक्काबियो 12:45)

हे प्रभु! हमें भी अपने जीवन के दिन गिनना सिखा दे। हम जीना सीखने के लिए अपनी मृत्यु के बारे में गहराई से सोच सकें।— **निशी अगस्टीन, कथीड्रल पल्ली, आगरा**

Death is Our Way to the House of the Father

1. Life: God our Father brought us into life. No one is born by an accident. Each one of us has been called from eternity to fulfil a divine vocation. He created our soul. He has drawn us into His intimate life with the sacrament of Baptism. "He has put His seal upon us and given us His Spirit in our hearts as a guarantee"-II Cor1:21-22. As the time goes on, God leads us by hand to higher and higher degree of sanctity. The Holy Spirit leads us through the events of our life to a deeper love for God. "Then He showed me the water of life., flowing from the throne of God...the tree of life. ... it's twelve fruits. ...the throne of God... Lamb shall be on it. ...His name will be on their foreheads. (Rev22:1-6.) Thus scriptures talk about our final destination: the House of the Father, our final destination, where it all began, the Garden of Eden, the Paradise.

2. Human activity cannot be reduced to strictly social and political spheres of action. Every individual has a profound religious dimension to his being. It informs all of his works and gives him tremendous dignity. He has to be the salt and the light of the world. The quality of 'Christian detachment ' will depend upon the depth of faith and hope. Have we grown accustomed to our prosperity and comfort of our earthly life? We should not forget the fundamental truth : For we have no lasting city but seek the city which is to come. Our hearts were created to last for all eternity. Things of the world cannot satisfy our nature and are there is an obstacle to our eternal happiness despite our sprit of 'sacramental poverty'.

3.Death. It is an indispensable step towards our reunion with God. He did not create death. We inherited the original sin from our parents Adam and Eve. We as the children of God, should view death as transition to eternity. Our strength of divine filiation will make us look at death without any fear but with holy expectation. "We must live and work in time within as the nostalgia for Heaven ". John Paul "We exclaim: We shall never die! We will be changing our lodgings. Nothing more until we meet again. (St J Escriva, News letter 1)

" It is the door to our true home. Our common homeland is not a 'forbidding tomb' ; but it is the bosom of the Lord - (C Lopez-Pordo, on Life and Death 1973). Did we keep the doors open on the earth? "Behold, I stand at the door and knock; if anyone hears my voice and opens the door, I will come into him and eat with him, and he with me"-(Rev 3:20) "Open to me ,my sister, my love, my dove, my perfect one; for my head is wet with dew, my locks with drops of the mist"-(Song 5:2) What has been our response to these calls? He will even wait on us while we eat!-(Lk12:35-38)

It is not the death of the body that matters but the final disposition of the Soul. Let us not forget the parable of the fig tree by the Lord. He warns us that even the patience of God has its limits though it appears that we can prolong it through our prayers. Theologians have termed these goods as 'Accidental Glory'. We can win time here on the earth! (R A Knox, pp188-189)

In heaven, we will see God. This will fill us with great joy. The extent of this joy will be related to our holiness on the earth. "But at midnight there was a cry. Behold, the Bridegroom! Come out to meet Him ". It is the immediate aftermath of our

Continued on Page...13

येसु का राजत्व और अधिकार (ख्रीस्त राजेश्वर पर्व पर विशेष)

ख्रीस्त राजा का पर्व हमारे लिए बहुत मायने रखता है, क्योंकि ख्रीस्त ही एकमात्र सच्चा राजा है। ख्रीस्त राजा के गुणों पर विचार करें तो उसके शासन और सत्ता की गहराई का पता नहीं लगा पायेंगे। आज मैं राजा येसु के कुछ गुणों को आपके साथ बांटना चाहता हूँ।

ख्रीस्त के जन्म के समय क्या हुआ? यह सब हम भलीभांति जानते हैं कि जब माता मरियम द्वारा पाप विनाशक ईसा मसीह का जन्म हुआ तो शैतान ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी कि किस प्रकार मुक्तिदाता राजा का अन्त किया जाये। उसने सन्त यूसुफ के मन में उलझन पैदा कर दी कि वह मरियम का त्याग कर दे, लेकिन ऐसा करने में असमर्थ रहा क्योंकि प्रभु ने स्वप्न में अपने स्वर्गदूत द्वारा सभी उलझनों को मिटा दिया। यह शैतान की सबसे बड़ी हार थी। इतना ही नहीं जब पूर्व दिशा से तीन ज्ञानी पुरुष अपने राजा को दण्डवत करने व उपहार चढ़ाने आ रहे थे, तभी शैतान ने यह दांव खेला कि क्यों न व राजा हेरोद द्वारा राजा ख्रीस्त को मरवा दे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि प्रभु के आदेश के बाद तीनों को स्वर्गदूत द्वारा यह समझा दिया गया कि किस प्रकार राजा हेरोद शिशु येसु को मार डालना चाहता है। इस प्रकार इन दोनों घटनाओं से यह प्रमाणित होता है कि ख्रीस्त महान राजा है। यह उसके कुशल राजा होने का प्रमाण है।

शैतान द्वारा प्रभु येसु की परीक्षा के विषय में हम भलीभांति जानते हैं। प्रभु येसु ने अपनी बुद्धि और आध्यात्मिक शक्ति द्वारा शैतान को हरा दिया। वह जानते थे कि उनकी एक गलती मानव मुक्ति की योजना को बर्बाद कर देगी। इस घटना से राजा ख्रीस्त द्वारा सही और गलत को कैसे चुनना है और पिता की योजना कैसे पूरी करनी है, इसके विषय में पता चलता है। इससे हमें पता चलता है कि ख्रीस्त राजा एक महान न्यायकर्ता हैं।

प्रभु येसु की उस घटना को याद करें कि जब फरीसी और शास्त्री उन्हें पहाड़ी की चोटी से गिराकर मार डालना चाहते थे। यह शैतान की एक भयानक चाल थी। लेकिन प्रभु येसु शैतानी विचार को भांपकर उनके बीच से चले गए। यह राजा ख्रीस्त की महान नीति को दर्शाता है कि हर समय हम विरोध द्वारा समस्या का हल नहीं निकाल सकते परन्तु शान्ति से हम अपनी समस्या पर विजय पा सकते हैं।

जब राजा येसु मृत्यु से पहले गेथसेमनी बारी में प्रार्थना कर रहे थे, तब शैतान ने बहुत सारी बाधायें उनके सामने खड़ी कर दीं, किन्तु प्रभु येसु ने शैतान की ओर ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं जब शैतान समझ गया कि क्रूस मरण द्वारा उसकी पराजय होने वाली है, तो उसने एक बार फिर पेत्रुस द्वारा मुक्ति योजना को रोकना चाहा किन्तु राजा येसु के सामने शैतान की एक न चली। राजा येसु ने अपने दु:ख और पीड़ा को स्वीकार करते हुए पिता की मुक्ति योजना के लिए अपने प्राण समर्पित कर दिए। इससे पता चलता है कि प्रभु येसु एक समर्पित राजा है और वह अपनी प्रजा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहता है।

दुनिया का कौन सा ऐसा राजा होगा जिसने अपने राज्य के लिए नहीं किन्तु अपनी प्रजा के लिए सबसे भयावह दण्ड झेला हो। लेकिन उस राजा ने तो अपना सर्वस्व लुटा दिया यहां तक कि स्वर्गीय सिंहासन, सत्ता, अधिकार, सुख-वैभव आदि ताकि उसकी प्रजा पूर्ण मुक्ति प्राप्त करे। उस महान राजा ने सबको गले लगाया और क्रूस पर अपने खून का आखिरी कतरा तक बहा दिया। क्रूस पर वे भी वह अपनी प्रजा के लिए शैतान से जंग

लड़ता रहा। जब शैतान समझ गया कि उसकी हार होने वाली है तो उसने फिर से एक दांव खेला। उसने प्रभु येसु को क्रूस पर से उतरने के लिए प्रलोभन दिया ताकि वह क्रूस पर नहीं मरे। इसलिए उसने वहां निकट दूसरे क्रूस पर टंगे डाकू को उभारा और उससे कहलवाया कि ''अगर तू ईश्वर का पुत्र है तो हमें और अपने आप को बचा'' लेकिन उस पीड़ा में भी शैतान की सभी चालों को समझते हुए उसने सब कुछ सह लिया और यह साबित कर दिया कि वह प्रेम का राजा है। उसने अपनी प्रजा के लिए नि:स्वार्थ भाव से अपना सर्वस्व लुटा दिया। जब प्रभु येसु को कब्र में रखा गया तो महायाजकों और नेताओं द्वारा शैतान ने फिर चाल खेली कि येसु को कब्र से बाहर आने से रोका जाये। उसने महायाजकों और नेताओं के द्वारा उनकी कब्र को भारी पत्थर से बन्द करवा दिया। लेकिन पुनर्जीवित प्रभु ने कब्र से निकलकर मौत तथा शैतान के बंधनों को तोड़ दिया और अपने शिष्यों और प्रेरितों को पुन: एकत्रित किया। उन्हें ख्रीस्त-राज की स्थापना के लिए आमंत्रित किया। प्रभु के शिष्य पवित्र आत्मा की शक्ति को ग्रहण कर शैतान का विनाश करने और भ्रांति के अंधेरे को मिटाकर प्रजा को फिर से पिता के राज्य में ले आए, जहां के राजा खुद प्रभु येसु ख्रीस्त हैं।

अब सोचने की बात यह है कि हम प्रभु येसु के राज्य के लिए क्या कर सकते हैं? उसने हमारे लिए सब कुछ लुटा दिया। क्या हम उनका अनुसरण बिना डर और झिझक के कर सकते हैं? यह बात सही है कि आज के परिवेश में प्रभु का अनुसरण करना काफी कठिन है, लेकिन फिर भी हमें विश्वास है कि यदि हम उनके पद् चिन्हों पर चलेंगे तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम ख्रीस्त के साथ उनके राज्य में होंगे। उस राज्य की प्रतिज्ञा स्वयं प्रभु ख्रीस्त ने हमसे की थी। एक ऐसा राज्य जहां प्रेम, शांति, न्याय होंगे तथा प्रभु ख्रीस्त के साथ मिलकर हम खुशी-खुशी अपना जीवन बितायेंगे। वहां कभी कोई गम नहीं होगा।

ब्रदर मितेश मार्टिन, मसीह विद्यापीठ, एत्मादपुर

Continued from Page...11

death that we encounter God in the 'Particular Judgement'.We will see all our actions on earth flashing before our eyes. It is Christ who will judge us-"to be the judge of the living and the dead." (Acts10:42). The Soul will find itself within the banqueting hall or outside the bolted door forever. (Lk 13:25;Matt7:23)

It is necessary that we be purified from all our sins to enter into eternal life. -"no one who practises abomination or falsehood, but those who are written in the book of life of the Lamb"-(Rev. 21:27) " Person conscious of the least trace of imperfection, Purgatory is ordained to do away with such impediments, and the soul enters the place of purification glad to accept the great mercy of God"-(St Catherine of Genoa,Treatise on Purgatory,12). This waiting room of Heaven is not a lesser hell but a place of preparation where the souls are duly cleansed of the remains of the sin before entering heaven. "Soul experiences very intense suffering due to a kind of flame more painful than anything that a man can suffer in this life"-(St Augustine-on Ps37:3). The Soul has already won the last battle and is awaiting more or less imminent encounter with God. "It is therefore a holy and wholesome thought to pray for the dead that they may be loosed from their sins"(Romania Missal, II Reading, All Soul Day, 2 Mach 13:43-44). Our duty towards our dear dead ones especially in November is to pray for them. How sweet will death be for the person who has fully repented of all personal sins and leap over Purgatory -(St Teresa, Way of Perfection, 40,9)

Let us pray "The Lord is my Shepherd. ....near restful waters He leads me.....In the Lord's own house I shall dwell for ever and ever. (Ps22:1-6)

Col. Franklin Dorairaj
St. Mary's Church, Noida

Are You the King of the Jews?

(A Theological Reflection on John 18:33)

The Gospel according to John takes the audience with Pilate into a major episode in the Passion narrative (18:28-19:22) devoting some thirty-five verses to it compared with Mark's fifteen. The confrontation divides into seven scenes. We shall study here, the second scene: Pilate interrogating Jesus (cf.18:33). The question asking Jesus; if He was King of the Jews, is recorded by all four gospel writers (cf. Mt 27:2,11-14, Mk 15:1-5, Lk 23;1-5, Jn 18:33-38a).

First of all let us see, who was Pilate? What was his role? How does he function his office?And what made him ask Jesus such question? Pilate gives us a story of ambition. Obviously, he was not a Jew. Pilate was the most powerful man in the country and you don't get that position by chance. It takes connection, networking and when it pays off, it is grand. Pilate was accountable only to Rome and he stood above everyone else in the province. He was in - charge of the military, finances and judicial system. In India, we distribute those roles among the various portfolios of the ruling government. Not so here. Pilate had it all.

Pilate summons Jesus inside his headquarters and immediately confronts him with the question: "Are you the king of the Jews?" He is not expecting a philosophical or theological discussion. Pilate is expecting a straightforward, yes or no. He is a practical and busy man. He assumes that Jesus' understanding of kingship is much the same as he thinks. On the other hand, whether Jesus is the king of the Jews is of importance, in Pilate's opinion, only for the Jews. For the Romans such claim is a jesting. But there is a strong sense that, Jesus' understanding of kingship is very different from that of Pilate. Jesus doesn't simply want to validate Pilate's view of king, since Pilate represents a very visible kingdom - the Roman Empire.

'King' is Pilate's term, but not for a moment he does believe that Jesus has any regal status. Although Jesus does not disown it, he intimates that Pilate's understanding of the title is far from the truth. Hence, Pilate cynically dismisses Jesus' assertion with a reply that indicates he thought of the pursuit of truth a vain folly.As a Roman governor, Pilate would certainly be interested in the claim of any king. Messianic expectations always ran high at Passover season and it would be easy for a Jewish pretender to incite the people into a riot or a rebellion against Rome. Pilate no doubt felt himself on safe ground when he asked about Christ's kingship. If Pilate had a Roman king in mind, then Jesus could be considered a rebel. If the governor was thinking about a Jewish kind of king, then political matters could be set aside. It is interesting to note that, Pilate called Jesus 'king' at least four times during the trail and even used that title for the placard he hung on the cross (Jesus of Nazareth, King of the Jews - Jn 18:39, 19:3, 14-15, 19).

Jesus did not say that, he had no kingdom in this world or that he would never rule on earth. He does have a kingdom in this world, whenever there are people who have trusted him and yielded to his sovereignty: "One day he shall

return and establish a righteous kingdom on earth" (cf. Dan 7:13-28). Pilate's concern was the source of this kingdom: Where did Jesus derive his authority? Graciously, Jesus consented to explain himself and his Kingdom. Yes, he admitted that, he is a king, but his kingdom (reign) does not come from the authority of emperor but from God. His kingdom is spiritual, in the heart of his followers and he does not depend on worldly means to advance his cause. If his kingdom were to be from this world then naturally his followers would have assembled an army and fought to release him from the Jews. Because, warfare is the code for human kingdom.

In Jn 18:37, Jesus explains who he is and what kind of kingdom belonged to him. Perhaps we have to understand it very well. He was 'born' which indicates his humanity, but he also 'came into this world' that shows his divinity. He not only tells his origin (cf. Jn 1:9-10, 3:17, 19:39) but also explains his ministry (cf. Jn 8:47, 10:27).Unlike the Synoptic gospels, John does not emphasis the message about the kingdom of God, but rather the kingship of the messenger. It is in these chapters 18 & 19 evangelist develops the significance of Jesus' royal status.

The gospel according to John parallels the basic details of Christ's interrogation before Pilate as found in the Markan tradition, but he reshapes it for his own theological purpose. John, cleverly develops the irony of the whole episode and makes it clear which of the two is the true king. Roman crucified the king of the Jews, but this was not his humiliation but his exaltation - the essence of his kingship. Rome's weapon was sword: but our Lord's weapon was the truth of God, the sword of the Spirit (cf. Eph 6:17).

Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru

त्योहारों की धूम!

जैसे ही आया माह अक्टूबर,
शुरु हुआ त्योहारों का रेला
बाजारों में धूम मची है,
सेल लगी है एमेज़ोन पर
बात करें अक्टूबर की तो, पतझड़ का है मौसम सुहाना
लाया साथ खुशियों का खजाना,
गाँधी जयन्ती, ईद-उल-मिलाद और दशहरा साथ लाया।

बात करें नवम्बर की तो, धमाके से यह माह है आता
और धमाका करके जाता, दीपावली, भैया दूज और
गुरुनानक का जन्मदिन लाता साथ खुशियों का निमंत्रण
त्योहारों की धूम मची है...
अब आया दिसम्बर माह!
जैसे ही आता आगमन काल
ख्रीस्तीय होते खुशी से निहाल
जब बात बड़े दिन की आती है
नये कपड़े, केक, पकवान साथ लाती है।
सेंटा आता खुशियाँ लाता
क्या हिंदू, क्या मुस्लिम सबके दिलों को भाता
त्योहारों की धूम मची है...
विदा हो गया साल पुराना
आयी भाई अब जनवरी
लायी नये वादे अब जनवरी
जो बीत गया वो कल था
अब नये साल में, नये सिरे से
कदम से कदम मिलाना है
खुले हाथ स्वागत करना है
नये सूरज की गति से चलना है
त्योहारों की धूम मची है।

अंजलीना मोसस, कौलक्खा, आगरा

SOLEMNITY OF CHRIST: THE UNIVERSAL KING

Christ the King Feast celebrates Christ as King and Lord of the Universe. The solemnity of our Lord Jesus Christ, the King, is celebrated on the final Sunday of Ordinary Time and the Sunday before Advent begins.

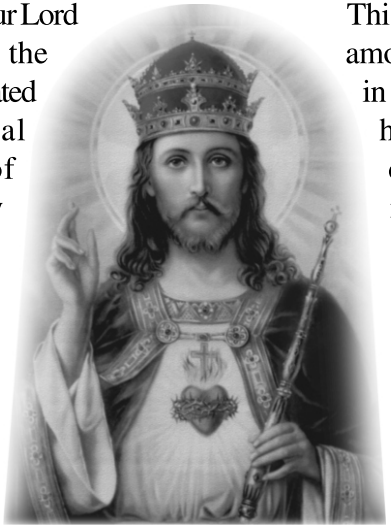

The Feast of Christ the King was established as Pope Pius XI in 1975 as an antidote to secularism, a way of life which leaves God out of man's thinking and living, and organizes his life as if God did not exist. The feast is intended to proclaim in a striking and effective manner, Christ's royalty over individuals, families, society, Governments and Nations.

Jesus Christ who is truly the Son of man, came to serve all, even His enemies. Rather than executing His opponents, He forgave them; rather than dominating His subjects, He exalted them. He even called them not servants, but friends and bestowed on them a share in His own priesthood and kingship. Though He died like any other king, it was for a different purpose. He died willingly to save His people and His death was not the result of a battle lost or a plan gone wrong, but of a glorious victory planned before the world began.

He rose in glory and at His heavenly coronation when He ascended to His Father, He was given a world wide dominion that will not pass away. He became the King of Kings.

We all believe that He will return in all His glory. His coming will sweep away ambition, vanity and pretension. Much of all that which appears important will look very important. No longer will oppression be allowed to stand, the innocent will finally be liberated from those who victimize them.

This feast reminds us that no one among us can be greater than God, in power or in majesty. If we ever have power, it is nothing compared to that of God. We must always be humble in front of our great King and God.

Jesus Christ saved us in the past, He is still saving us in the present and will continue to save us in the future, when He comes again. He is the ultimate power and authority and He has an eternal kingdom. He has authority over all the things of this world.

Jibi Lukose, St. Mary's Church, Agra

DATES TO REMEMBER

NOVEMBER

03 O.D. Fr. Vineesh Joseph
03 O.D. Fr. Lawrence V. Raja
03 O.D. Fr. Alok Toppo
03 O.D. Fr. Francis D'Souza
07 B.D. Fr. Francis D'Souza
09 B.D. Fr. Arul Kumar [Lazar]
10 B.D. Fr. Rajan Dass
18 O.D. Fr. Rajan Dass
22 B.D. Fr. John Ferreira
23 O.D. Fr. Jose Maliekal
23 B.D. Fr. Xavier Arimboor
26 B.D. Fr. Santeesh Antony
27 B.D. Fr. Charles Toppo
30 B.D. Fr. Elias Correia
30 O.D. Fr. Thomas K.C.
30 B.D. Fr. Alwyn Pinto

यीशु पर विश्वास करना

तब यह आकाशवाणी हुई– ''यह मेरा प्रिय पुत्र है'' जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ (मत्ती 3:27) क्योंकि यह मेरी मर्जी का कार्य करता है, मेरी मर्जी के खिलाफ नहीं जा सकता, यह अपने प्राण दे देगा लेकिन मेरी खिलाफत नहीं करेगा इसलिए मैं इससे प्रसन्न हूँ।

जीवन में सुख और दु:ख धूप–छाँव के समान सतत परिवर्तित होते रहते हैं। कभी सुख की शीतल सुगन्ध की फुहारें उड़ती हैं, तो कभी दु:ख की जलती–बिखरती चिनगारियां फैलती हैं। सुख के पल यूँ ही फिसल जाते हैं फिसल जाते हैं कि पता ही नहीं चलता और सुख की सदियां भी कम लगती है, परन्तु दु:ख के पल काटे नहीं कटते लेकिन जो अय्यूब की तरह दृढ़ निश्चयी विश्वासी होते हैं परमेश्वर अपने वायदे के अनुसार उनके साथ रहता है। परन्तु मैं तो परमेश्वर को ही खोजता रहूँगा और अपना मुकदमा परमेश्वर पर छोड़ दूँगा। (अय्यूब 5:8) परमेश्वर ने मनुष्य के अन्दर एक दिव्य शक्ति प्रदान की है, अगर मनुष्य का उस दिव्य शक्ति से सम्पर्क स्थापित हो जाये तो जीवन में कोई दु:ख या सुख का अहसास ही नहीं होगा, यदि एक बार आपको आन्तरिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाए तो इस तरह खिल जाओगे कि कोई भी आपकी मुस्कान आपसे नहीं छीन सकता। पवित्र बाइबिल आनन्द, खुशी, प्रेम जैसे शब्दों से भरी पड़ी है। उसमें अंकित पवित्र शब्द हमें जीना–मरना और आनन्दमय जीवन जीना सिखाते हैं। जीवन बहुत बहुमूल्य है, नाजुक और कई बार बहुत छोटा होता है। परन्तु परमेश्वर ने इसे अपने हाथों से सींच कर मजबूत और जीने की चाह रखने वाला बनाया है। हम स्वयं में सामर्थी नहीं हैं पर प्रभु यीशु के साथ रहकर हम हर चुनौती का सामना कर सकते हैं। प्रिय परमेश्वर अपने मार्गों पर चलने की समझ और सामर्थ्य हमें प्रदान करे, कि हम आज्ञाकारिता पर ध्यान दें। मूसा ने यहोवा से कहा– हे मेरे प्रभु मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था और जब से तू अपने दास से बातें करने लगा, मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ। यहोवा ने उससे कहा? मनुष्य का मुँह किसने बनाया? मनुष्य को गूँगा या बहरा देखने वाला या अंधा मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? अब जा मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊँगा। (निर्गमन 4:10–12)

परमेश्वर का देखना मनुष्य जैसा नहीं है मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि मन पर रहती है। (1 समूएल 16:7) उसने मुझसे कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है। मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर गर्व करूँगा ताकि मसीह की सामर्थ मुझ पर दया करती रहे। (2 कुरिन्थियों 12:9)। परमेश्वर ने यहोशु से कहा– तेरे आगे–आगे चलने वाला यहोवा है। वह तेरे संग रहेगा और न तुझे धोखा देगा और न छोड़ेगा, इसलिए मत डर और तेरा मन कच्चा न हो। विश्वास एक ऐसा विचार है जो इतना सरल लगता है, शायद इसलिए क्योंकि हम अक्सर इसका उपयोग करते हैं। विश्वास का अर्थ है नियन्त्रण को त्यागना, यहाँ तक कि यीशु ने झिझकते हुए कहा, हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले। (लूका 22:42) और क्रूस से वह परमेश्वर को पुकारते हुए कहता है। तूने मुझे क्यों छोड़ दिया (मत्ती 27:46) अपने सवालों और आशंकाओं के बावजूद यीशु ने स्वयं का नियन्त्रण छोड़ दिया और परमेश्वर पर हर कदम पर भरोसा करना चुना, यीशु ने हमें भी ऐसा करने के लिए आमंत्रित किया है। प्रिय परमेश्वर हमें अपने मार्गदर्शन को पहचानने और स्वीकार करने में हमारी मदद करे।

एस.बी. सेमुएल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

Saint of the Month

St. Cecilia

Feast Day : 22 November

St. Cecelia was born a Patrician in Rome, towards the close of the 2nd Century, while Alexander Severus was the reigning emperor, but was brought up Christian. From her early age, she had determined to remain single for the love of God; she used to fast and perform all kinds of penance and charitable works. But her parents had other designs for her and so gave her in marriage to a young Patrician named Valerian. In the evening of her wedding day, with the music of the marriage hymn still ringing in her ears, Cecilia renewed her vow of virginity to God. On retiring to the bridal chamber, Cecilia plucked up courage and said to her bridegroom; I have a secret to share with you - "I have an angel of God watching over me. If you touch me in the way of marriage, he will be angry with you, you will suffer; and if you respect my maidenhood he will love you as he loves me." Valerian, a nobleman, agreed to comply to Cecilia but asked her to show him this angel, "If you believe in the one living and true God and receive the waters of baptism, then you will see the angel," was Cecilia's reply. After receiving baptism he returned to Cecilia, he found her to his dismay conversing with an angel. The angel approached him and laid upon the head of each chaplet of roses and lilies. Valerian was so moved that within a few days he and his brother, Tiburtius, who had been brought by him to the knowledge of the faith, scaled their confession with their martyrdom - They were beheaded by Almachim, the Prefect.

Cecilia was called on to repudiate her faith, her answer to the threats of the was, "Do you not know that I am the bride of my Lord Jesus Christ?" Though sentenced to death by suffocation she remained alive a day and a night even immersed in boiling water. Emerging unscathed, she was then struck with an axe in the head and breast. She lay bleeding for three days, praying and was able to convert and introduce to God. Super natural realities that penetrate our lives and invite us to live for God alone, no matter what is cost's. St. Cecilia taught the faithful not to betray the truth, but to preserve the faith to the shedding of their blood. She exhorted to disdain this present world, as vain and fleeting, that they might enjoy life unending in the heavens. Having instructed them sufficiently and accomplishing all she desired according to God. The far famed Cecilia surrendered her blessed soul to God. She is patroness of sacred music.

"ALWAYS BE EXAMPLES OF OUR FAITH FOR OTHERS."

Sr. Shalini, Satya Seva Sister, Agra

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में प्रथम परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार दिए गए

आगरा, 3 अक्टूबर। कोरोना काल की लम्बी प्रतीक्षा के बाद अन्ततः वह सुखद दिन आया, जबकि हमारी सेंट पेट्रिक्स चर्च, आगरा छावनी में बच्चों को प्रथम बार परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार प्रदान किए गए।

विगत डेढ़ वर्ष से बच्चे इन संस्कारों को पाने के लिए स्वयं को धर्मशिक्षा की कक्षाओं (तालीम) के द्वारा अपने आपको तैयार कर रहे थे, किन्तु हर बार तारीख आगे बढ़ानी पड़ती थी – सिर्फ तारीख पर तारीख... बच्चे भी मायूस से होने लगे थे। बार–बार अपने माता–पिता और अभिभावकों से पूछते थे, कि वह शुभ दिन कब आएगा, जब उन्हें ये संस्कार दिए जाएंगे – और फिर डेढ़ वर्ष की गहन प्रतीक्षा के बाद रविवार 3 अक्टूबर का वह शुभ दिन भी आ ही गया, जब 29 बच्चों ने पहली बार येसु को पवित्र परमप्रसाद के रूप में ग्रहण किया और अपने विश्वास की दृढ़तापूर्वक गवाही दी।

श्रद्धेय फादर ग्रेगरी थरायल (पल्ली पुरोहित) एवं श्रद्धेय फादर शाजुन (सहायक पल्ली पुरोहित) काफी समय से इन बच्चों को धर्मशिक्षा देकर इस दिन के लिए तैयार कर रहे थे।

समारोह के दिन बच्चे माता मरियम के पवित्र ग्रोटो से जुलूस बनाकर चर्च के भीतर वेदी तक गए, जहाँ उन्हें उनके पूर्व निर्धारित स्थान पर बिठा दिया गया।

अति श्रद्धेय महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मन्जलि ने पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। अपने प्रभावशाली प्रवचन में आर्चबिशप ने बच्चों से इन संस्कारों की गंभीरता एवं उनके पालन के बारे में बताया। पहले दृढ़ीकरण संस्कार प्रदान किया गया। तत्पश्चात प्रथम परमप्रसाद संस्कार दिया गया।

मिस्सा के अंत में पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी ने महाधर्माध्यक्ष के प्रति आभार प्रकट किया। साथ ही पल्ली समिति, गायन मण्डली, पल्ली के सभी युवाओं और स्वयंसेवकों को भी धन्यवाद दिया।

पवित्र मिस्सा के बाद बच्चों ने स्वामी जी के साथ फोटो खिंचवाई तथा जलपान का आनन्द लिया।

— लॉरेन्स मसीह, आगरा छावनी

Father Rector's Day celebrated in our Gurukul

Agra, 5 Oct. We celebrated our beloved Rev. Fr. Rector's birthday as Rector's Day here in our Minor Seminary (Gurukul) with lot of joy and jubiliation.

The day began with a solemn thanksgiving Holy Eucharist. We thanked the Almighty for the gift of heathy and happy life given to our beloved Rev. Fr. Prakash D'Souza, the Rector. The Lord has blessed him with lot of blessings and talents.

Rev. Fr. Dominic Amit George and Fr. Santosh D'Sa also concelebrated in the thanksgiving Mass. These two fathers are Rev.Fr. Rector's batchmates. Fr. Dominic gave a brief introduction of the Mass. He also shared with us his nostalgic feelings of being in the Seminary during initial days. He said that whenever Fr. Prakash was found missing in the Seminary, he would be in the seminary chapel. Fr. Santosh D'Sa preached a memorable homily. He said Fr. Prakash has been blessed with multiple qualities. Rev. Sisters from our neighbouring convents also joined us in the Mass.

After the Mass, we got together in the dinning hall, where he had the cake ceremony. It was followed by a sumptous breakfast.

Later, during the day before lunch, we, the students staged a variety entertainment programme, when we felicitated the birthday boy. Various items i.e. singing, dance, speeches and a comic show were presented. It was followed by a great preetibhoj. Long live Father Rector!

- Bro. Suman Topno
St. Lawrence Minor Seminary, Agra

Synod 2021-2023: Inaugural Eucharist offered

Agra, 17 Oct. The most awaited inaugural Eucharistic celebration of the forthcoming Synod was celebrated by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, Archbishop of Agra, at the Cathedral of the Immaculate Conception, Agra.

Rev. Fr. (Dr.) Santosh D'Sa gave an informative introduction of the Mass. He explained the meaning and purpose of the Synod. It was followed by the unveiling of the logo of Synod, by the Archbishop. Then as a symbolic gesture of participation from all walks of life, a traditional lamp was lit by the Archbishop, Rev. Fr. Ignatius Miranda, Parish Priest of the Cathedral Church, Rev. Sr. Leena Mater RJM, Religious representative, Mr. Joseph, Lay representative Mr. Olive, Youth representative.

During the Holy Mass the main celebrant Most Rev. Dr. Raphy Manjaly earnestly prayed for the intention of the Synod 2021-2023.

- Fr. Viniversal D'Souza

Rosary Month Culminated in St. Patrick's

October, the Month of Rosary is dedicated to our Mother Mary. St. Patrick's Church, Agra started this month of Rosary with complete dedication and enthusiasm. The Rosary was conducted by Fathers and Canosian Sisters in the houses of the parishioners with all sincerity and faith.

For ten consecutive days, Rosary was conducted in the Church. Most of the parishioners devotedly took part in the Rosary and prayer for the well being of the people all over the world.

On the 17th and 24th October, the Mission Sunday was celebrated with full fervour and enthusiasm. A wide variety of food stalls and games were put up by the members of all four wards, Vincent de-Paul, Youth and Mahila Mandal. The event was a great success.

On 30th October, we had Holy Eucharist followed by a Rosary procession in which many took part religiously. The last Sunday of the month, 31st October, was a salient day for all the parishioners of St. Patrick's Church.

The Marian Group Singing and Tableau competitions were conducted on this day. It was based on the mysteries of the Rosary. There was a lot of joy, excitement and a healthy dose of competitiveness among the parishioners.

We started with Rosary and then we had the Holy Eucharist offered by Rev. Fr. Bhaskar Jesuraj, Rev. Fr. Shajun and our Parish Priest Rev. Fr. Gregory Tharayil. The Sermon by Rev. Fr. Shajun, during the Holy Eucharist, redirected and re-educated us about the two main commandments of love given by Our Lord Jesus Christ.

After the Eucharistic Celebration the singing competition started. Rev. Fr. Saji Palamattom (Jacob) , Rev. Sr. Gracy, Dr. Minu and Mr. Shaju were the judges. The competition began with St. John De Britto ward. The second group was Thomas ward. The third was Francis ward, followed by Alphonsa ward.

Later in tableau competition each ward participated and showcased the best of their capabilities. Thus the grand celebration of October Month of Rosary came to an end. One of the important outcomes of the entire Month of Rosary was that all the parishioners actively took part in competitions and came together as one family in Christ. **- Dorris D'Cruze, Agra**

सेंट जॉन पॉल स्कूल में संरक्षक संत का महापर्व मनाया गया

आगरा, 22 अक्टूबर। सेंट जॉन पॉल स्कूल, फतेहाबाद में संरक्षक संत जॉन पॉल (द्वितीय) का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उत्सव के मुख्य अतिथि आर्चबिशप श्रद्धेय डॉ. राफी मंजली एवं प्रबंधक फादर प्रकाश डिसूजा थे। अतिथियों का स्वागत नन्हें बच्चों द्वारा पुष्प वर्षा करके किया गया।

कार्यक्रम के आरम्भ में दीप प्रज्जवलित किया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा नृत्य, नाटक, भाषण एवं अनेक अन्य रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। बच्चों द्वारा बुके एवं कार्ड देकर मुख्य अतिथियों का अभिनन्दन किया गया। आर्चबिशप डॉ. राफी मंजली एवं प्रबंधक फादर प्रकाश डिसूजा द्वारा ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि ने बच्चों के प्रस्तुतीकरण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने ने अपने आशीर्वचनों के साथ बच्चों को प्रेरित किया, कि वे सदैव आगे बढ़ते रहें। सूरज जिस प्रकार सबको उजाला प्रदान करता है, उसी प्रकार वे भी अपने कार्यों से देश और समाज का नाम रोशन करें। उन्होंने कहा कि इस ग्रामीण क्षेत्र में यह विद्यालय बच्चों के भविष्य के निर्माण का एक स्वर्णिम कार्य कर रहा है। प्रबंधक फादर प्रकाश डिसूजा द्वारा भी बच्चों को सदैव उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर सान्तियागो राज ने मुख्य अतिथि एवं सबके प्रति धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के आयोजन एवं प्रस्तुति में शिक्षक वर्ग एवं छात्रगण ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

—फादर सान्तियागो राज, फतेहाबाद

Mission Sunday celebrated in St. Patrick's Parish, Agra

The World Mission Sunday was celebrated with great zeal and fervour in our St. Patrick's Parish on 24th October, 2021. Rev. Fr. Gregory Tharayil, Rev. Fr. Bhaskar Jesuraj, Rev Fr. Shajun were the celebrants of the Holy Eucharist. Rev. Fr. Bhaskar in his homily emphasized on the missionary zeal, and mission message of Lord's compassion to the world. He said that all the baptized are missionaries by nature. He also exhorted that like the Apostles and the early Christians we too cannot but speak about what we have seen, heard and experienced, from the Lord. Everything that we received from Lord is to be shared for the goodness of others.

He also stated that we are not merely missionaries but also the Mission. By our own way of life we have to radiate the love and mercy of God to the entire world.

After the Holy Eucharistic celebration we had a small fete organised by various committees of our parish to raise funds for the mission. We had put up some stalls for refreshments and also few games were organised by the Youth members. It was indeed a meaningful and fruitful celebration.

- Mrs. Merlyn Lazarus
St. Patrick's Church, Agra Cantt.

World Mission Sunday celebrated in Cathedral Parish

Agra, 24 Oct. We celebrated the World Mission Sunday on Sunday 24 Oct. in our Cathedral Parish, Agra. Rev. Fr. Santeesh Anthony offered the Holy Eucharist in the Church, while the youth of the Parish conducted the melodious choir.

After the Holy Mass Parish Youth or organised a small mela (fete) with food stalks and auction, in order to raise the fund and support of the Church. Besides these various games stalls were also put up in the fete. Housie (tambola) was the main attraction of the Mission Sunday mela. The fete began with a spontaneous prayer led by Rev. Fr. Lawrence V. Raja, Administrator of the Cathedral House, Agra. The parishioners, young and old alike actively participated in the fete. Religious Sisters also contributed generously for the cause of the Mission.

Rev. Fr. Ignatius Miranda, Parish Priest gave away the prizes to the winners of Tambola game.

-Caron Wilson, Cathedral Parish, Agra

संत जूड पल्ली में संत जूड का महापर्व दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

आगरा, 24 अक्टूबर। संत जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा में पल्ली के संरक्षक संत जूड का पर्व बहुत हर्ष के साथ मनाया गया। विश्वासियों की मण्डली द्वारा संत

जूड को सम्मानित कर याद किया गया। पवित्र मिस्सा के मुख्य याजक प्रकाश डिसूजा, फादर मून लाजरस तथा पल्ली पुरोहित फादर राफी थे। मिस्सा बलिदान में फादर स्टीफन और फादर शाजुन ने भी भाग लिया। अपने प्रवचनों में फादर मून लाजरस ने कहा, कि 'संत यूदा प्रभु ख्रीस्त के निकटतम संबंधी व उनके बारह चेलों में से एक थे। वे हमेशा प्रभु की बातें धैर्य से सुनते थे। वे प्रभु येसु के मरने के बाद अपनी जीवन साक्षी द्वारा बहुत से लोगों को ख्रीस्तीय विश्वास में लाये।'

पर्व को योग्य रीति से मनाने के लिए पल्ली पुरोहित फादर राफी के साथ फादर शिजु, हैल्पर्स ऑफ मेरी धर्मसमाज की सिस्टर्स व सभी पल्लीवासियों ने काफी दिन पहले से ही जोर शोर से तैयारी शुरु कर दी थी। समारोह के प्रारम्भ में संत यूदा की मूर्ति को लेकर चर्च से ग्रोटो तक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। वेदी सेवक श्वेत पोशाकों में और फ्लावर गर्ल्स गुलाबी रंग के परिधानों में शोभायात्रा की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे थे। संत यूदा के बारे में एक कहानी प्रचलित है। एडासा नामक स्थान पर एक राजा था जिसका नाम था अकबार। वह कुष्ठ रोग से ग्रस्त था। कई चिकित्सकों से इलाज के बाद भी वह अपनी बीमारी से छुटकारा न पा सका। उसने प्रभु येसु की कीर्ति कई लोगों से सुनी थी, इसलिए उसने अन्नस को प्रभु को लाने भेजा, पर उस समय प्रभु येसु राजा अकबार के बुलावे पर स्वयं नहीं जा पाये। अतः प्रभु येसु ने संत यूदा को अपने पास बुलाया और एक वस्त्र के टुकड़े से अपना चेहरा पोंछा। उस वस्त्र के टुकड़े पर प्रभु की छवि छप गई। तब वह कपड़ा प्रभु ने संत यूदा को देकर एडासा के राजा अकबार के पास ले जाने को कहा। संत यूदा उस कपड़े को अपनी छाती पर संभाल कर रख कर एडासा की ओर चले पड़े। जब संत यूदा राजा अकबार के पास पहुंचे तो उन्होंने वह वस्त्र अपनी छाती से हटाया और पाया कि प्रभु कि छवि उनकी छाती पर अंकित हो चुकी थी। उस कपड़े में प्रभु की छवि का तेज जो था। उस तेज से राजा अकबार पूरी तरह चंगा हो गया। इसी घटना की वजह से हम सभी संत यूदा की हर एक तस्वीर में देखते हैं कि उनकी छाती पर प्रभु की छवि अंकित है।

आज हमारे समाज के लोग निरंतर प्रगति तो कर रहे हैं पर लोगों में धैर्य, सहनशक्ति की कमी हो गई है। एक दूसरे को सहानुभूति दिखाने का भी समय नहीं रहा और इसलिए निराशा उन्हें निरंतर घेरती जा रही है। ऐसी अवस्था में हमें चाहिए कि हम संत यूदा से हमेशा मध्यस्थता के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि संत यूदा थदेयुस निराश्रितों के संरक्षक संत हैं। वे हमारे लिये प्रार्थना करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

अंजलीना मोसेस, संत जूड पल्ली, आगरा

ऐतिहासिक गिरजाघर में पुरोहिताभिषेक सम्पन्न

आगरा 31 अक्टूबर। आगरा के समस्त ईसाई समाज के लिए 31 अक्टूबर का दिन ईश्वर को धन्यवाद देने का अवसर रहा, जब वजीरपुरा मार्ग स्थित निष्कलंक माता महागिरजाघर में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि द्वारा तीन

उपयाजकों श्रद्धेय अजय, बबिन एवं जस्टिन अगस्टीन को पुरोहित अभिषिक्त किया गया। इस अवसर पर अपने प्रभावशाली प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष ने भारतीय समाज में और विशेषकर ईसाई परंपरा में पुरोहित की भूमिका पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होनें बताया कि ''पुरोहित ईश्वर और सामान्य जनता के बीच एक सेतु की भांति होता है। उसका मुख्य कार्य ईश्वर के वचन की घोषणा करना होता है। ये नव पुरोहित सेवक बनेंगे। ये योग्य हैं, यह बात मुख्य नहीं है। इन्हें योग्य बनना है, अधिक महत्वपूर्ण है। पुरोहितों के संरक्षक संत योहन मरिया वियान्नी की भांति इंसान में ईश्वर को देखना है। प्रार्थना में सजग रहना है। आज पुरोहितों के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं... हम में से हरेक व्यक्ति को अपने पुरोहितों के लिए प्रार्थना करना है, उन्हें संबल देना है।''

172 वर्ष पुराने महागिरजाघर में अभिषेक विधि में भाग लेने के लिए आगरा महाधर्मप्रात के सोलह जिलों के विभिन्न क्षेत्रों से पुरोहितों व विश्वासियों ने भाग लिया। मुख्य प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने तीनों उम्मीदवारों को सम्बोधित करते हुए उन्हें बदलते युग-परिवेश में पुरोहित की जिम्मेदारियों का एहसास कराया। उन्होंने उन्हें बताया कि 'उन्हें अपने उत्तम आचरण और मृदुल व्यवहार से ईश्वरीय कृपा और अनुकंपा को साक्षात करना है। स्वयं प्रभु ईसा मसीह का दूसरा स्वरूप बनकर ईश्वरीय करूणा बांटना है।'

धर्मविधि से पहले उम्मीदवारों ने अपने माता-पिता व अभिभावकों के साथ विशाल गिरजाघर में प्रवेश किया। उम्मीदवारों के माता-पिता एवं अन्य परिजनों ने उन्हें महाधर्माध्यक्ष को सौंप दिया। तत्पश्चात महाधर्माध्यक्ष ने उनकी स्वेच्छा के सम्बन्ध में सहमति प्राप्त की। तब तीनों उम्मीदवारों को आजीवन ब्रह्मचर्य एवं आज्ञापालन की शपथ (पुरोहितिक व्रत) दिलाई गई तथा आशीष के पवित्र तेल से उनका अभिषेक किया गया। उपस्थित सभी पुरोहितों ने परंपरा का अनुसरण करते हुए उनके सिरों पर हाथ रखकर ईश्वर से प्रार्थना की एवं पूजा के पवित्र वस्त्र धारण कराए।

पूजन विधि का संचालन फादर विनिवर्सल डिसूजा ने किया। इस अवसर पर चर्च की गायन मण्डली ने फादर प्रकाश डिसूजा और फादर अमित के निर्देशन में सुन्दर गीतों के माध्यम से भक्तिभावना में चार चाँद लगा दिए। पुरोहिताभिषेक के तुरंत बाद गिरजाघर में ही एक छोटा सा अभिनन्दन समारोह का आयोजित कर नव पुरोहितों का सम्मान किया गया।

क्रिश्चियन समाज सेवा सोसाइटी के अध्यक्ष श्री डेनिस सिल्वेरा ने बताया कि इन तीन नए पुरोहितों को मिलाकर आगरा महाधर्मप्रांत में पुरोहितों की कुल संख्या 81 हो गई है। नए पुरोहितों की नियुक्ति दिसम्बर माह में होगी। उन्होंने तीनों नवाभिषिक्त पुरोहितों को बधाई देते हुए उनके लिए मंगलकामना की है।

— ब्रदर राहुल लाकरा, आगरा

माला विनती महीने (अक्टूबर) का श्रद्धापूर्वक समापन

आगरा, 31 अक्टूबर। कथीड्रल पल्ली में माला विनती की भक्ति को समर्पित अक्टूबर महीना भक्तिभाव के

वातावरण में समाप्त हो गया। इस अवसर पर महागिरजाघर में माता मरियम के आदर-सम्मान में धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान आयोजित किया गया, जिसमें भक्तजनों ने बढ़चढ़कर भाग लिया और माता मरियम के माध्यम से ईश्वर से प्राप्त सभी वरदानों और कृपाओं के लिए धन्यवा दिया।

मुख्य याजक फादर यूजिन मून लाजरस के साथ पल्ली पुरोहित फादर इग्नेशियस मिराण्डा और फादर एण्ड्रयू कोरिया ने पवित्र मिस्सा चढ़ाया। मिस्सा के तुरन्त बाद सभी लोग अपने हाथों में जलती मोमबत्तियाँ लेकर जुलूस के रूप में चर्च प्रांगण में गए। भक्तिभावना से माला विनती जपते हुए सभी माता मरियम के पवित्र ग्रोटो पर पहुँचे। वहाँ फादर विनिवर्सल डिसूजा (सहायक पल्ली पुरोहित) ने माता मरियम की पवित्र मध्यस्थता पर एक प्रभावशाली सन्देश दिया। अंतिम आशीष फादर इग्नेशियस मिराण्डा ने दी। तत्पश्चात प्रसाद वितरण हुआ। भक्तजन देर रात तक माता मरियम की पवित्र मूर्ति के निकट मोमबत्तियाँ जलाकर प्रार्थना करते रहे।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी पल्ली पुरोहित फादर इग्नेशियस मिराण्डा के निर्देशन में प्रतिदिन सांयकालीन मिस्सा और उसके बाद ग्रोटो पर माला विनती जाप का आयोजन किया गया। प्रतिदिन माला विनती जपने व उसका संचालन करने की जिम्मेदारी पल्ली के विभिन्न धार्मिक संगठनों जैसे- कैम्पस सिस्टर्स, फादर्स, तालीम पढ़ने वाले बच्चे, लीजन ऑफ मेरी, छात्रावास कन्याओं, किशोरी संगठन, धर्मशिक्षा पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं, युवा मण्डल आदि को दी गई, जिसे सभी ने बड़ी जिम्मेदारी की भावना के साथ निभाया।

अंतिम दिन माला विनती जाप व गायन मण्डली का आयोजन पल्ली के युवाओं द्वारा किया गया। प्रभु की निष्कलंक माता हम सब पल्लीवासियों के लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थना करती रहे।

—फादर विनिवर्सल डिसूजा

Newly Ordained Priests begin their 'Journey' at their 'Alma Mater'

Agra, 1 Nov.: The newly ordained priests, namely Frs. Ajay, Babin and Justin Augustin began their 'Priestly Journey" at their 'Alma Mater" St. Lawrence Minor Seminary, Agra. On the very next day of their Priestly Ordination, they decided to return to their roots. We, the inmates of St. Lawrence Minor Seminary eagerly awaited their arrival. Though, we all were present for their priestly ordination ceremony previous day. Along with their family and friends, the newly ordained priests reached their Alma Mater early in the morning. They offered their very first Holy Thanksgiving Mass in the Seminary chapel. The seminary staff concelebrated the Mass. Fr. Eugene Moon Lazarus welcomed them on behalf of the Seminary family. Fr. Ajay gave an introduction to the Mass, while Fr. Babin preached an emotional homily. Fr. Justin was the main celebrant of the Mass.

Rev. Fr. Louis Xess, Vice Rector, felicitated the newly ordained ones and arranged a delicious breakfast in honour of the newly ordained priests.

After the Mass, some photographs were taken to capture the moment. Later, they took off to see the most beautiful monument of the world, the Taj Mahal.

May God bless you dear Frs. Ajay, Babin and Justin. The 'Vineyard' awaits your arrival.

Bro. Suman Toppo
St. Lawrence Minor Seminary, Agra

'ऑल सॉल्ज़ डे' पर नम आँखों से याद किया प्रियजनों को

आगरा, 2 नवम्बर। आज का दिन ईसाई पंचांग में ऑल सोल्ज़ डे (मृतकों का स्मरणोत्सव) या मुर्दों की ईद के रूप में जाना जाता है। इस दिन की समानता मुस्लिम धर्म के शब्बे बारात या हिन्दुओं के श्राद्ध दिवस से की जाती है। इस दिन मसीही लोग अपने परिवारीजनों, प्रियजनों की समाधि पर जाकर फूल चढ़ाते, मोमबत्तियां, अगरबत्तियां जलाते हैं। उनकी आत्मशांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

इस वर्ष कोरोना संक्रमण के कारण नगर के दो ईसाई कब्रिस्तानों गोरों का कब्रिस्तान (आगरा छावनी) एवं मार्टर्स सिमिट्री (निकट भगवान सिनेमा) में विश्वासियों की सीमित संख्या में संयुक्त प्रार्थना सभा (पवित्र मिस्सा बलिदान) आयोजित की गई। फिर भी अधिकांश विश्वासियों ने सरकारी अनुदेशों का पालन करते हुए अपने घरों में रहकर ही प्रार्थना की और नम आँखों से उन्हें श्रद्धांजलि दी।

आगरा संयुक्त कब्रिस्तान कमेटी के चेयरमेन फादर मून लाजरस ने बताया कि आगरा में ईसाई धर्मसमाज के चार बड़े कब्रिस्तान हैं, जहाँ मृतक दफनाए जाते हैं। आगरा का सबसे बड़ा कब्रिस्तान के.वी. स्कूल के निकट छावनी स्थित गोरों का कब्रिस्तान है, इसकी सुरक्षा थल सेना करती है। दूसरा कब्रिस्तान भगवान सिनेमा के नजदीक मार्टर्स (रोमन कैथोलिक सिमिट्री) है, जिसकी देखभाल पुरातत्व विभाग करता है। तीसरा कब्रिस्तान लोहामण्डी निकट तोता का ताल पर क्रिश्चियन सिमिट्री और चौथा मरियम की टूम्ब, सिकन्दरा के निकट है।

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी इन कब्रिस्तानों में सम्बन्धित पुरोहितों ने पवित्र जल छिड़ककर कब्रों की आशीष दी और मृतात्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की। गोरों के कब्रिस्तान में फादर राफी, फादर भास्कर, फादर स्टीफन, फादर शिजु, फादर लुईस, फादर शाजुन व फादर सान्तियागो ने तथा तोता का ताल कब्रिस्तान में फादर मून लाजरस, एवं रोमन कैथोलिक सिमिट्री, निकट भगवान टाकीज में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मन्जलि, फादर इग्नेशियुस मिराण्डा, फादर एण्ड्रयू कोरिया, फादर विनिवर्सल डिसूजा एवं फादर जामिल्टन आदि ने प्रार्थना कर, जल छिड़ककर कब्रों पर आशीष दी।

कब्रिस्तानों में फूलों से सजी और मोमबत्तियों की रोशनी में जगमगाती कब्रों को देखकर लग रहा था, कि आज ही दीपावली का त्योहार मनाया जा रहा है। देर शाम तक लोग अपने प्रियजनों की कब्रों पर प्रार्थना करते रहे। उन्होंने अपने प्रियजनों को श्रद्धांजलि दी और उनकी आत्मशांति के लिए प्रार्थना की।

डेनिस सिल्वेरा, सचिव
आगरा ज्वाइण्ट सेमेट्री कमेटी, आगरा

Cardinal Ossie gives a surprise visit

Agra, 4-5 Nov. His Eminence Oswald Cardinal Gracias, our former Archbishop and at present the Archbishop of Bombay, gave a surprise visit to his beloved Taj Nagari, the Archdiocese of Agra.

His Eminence came to the national capital for some urgent meeting. And then he couldn't stop himself from coming to Agra. He was a accompained by Most Rev. Dr. Albert D'Souza, Archbishop Emeritus (Agra Archdiocese), and Rev. Fr. Jarvis D'Cunha, Secretary CBCI, New Delhi. He just reached on time for dinner and then rested in the Vianney Home, Agra.

On the next day i.e. 5th Nov. he along with Archbishop Albert and Fr. Jarvis said Mass in Vianney Home Chapel. Then after breakfast he visited St. Joseph's Pastoral Centre, St. Peter's College, St. Lawrence Seminary. Besides that he met Deans and Consultors, Campus Priests and Religious and had lunch with city fathers.

Later in the evening he paid a visit to Masih Vidyapeeth, Etmadpur, Agra where he had a formal meeting with the staff and students of the seminary.

On 6th Nov. morning he, after the Mass, left for Delhi, via Greater Noida. He stoped at newly built and blessed St. Joseph's Church, G. Noida, He marvelled at the beauty and construction of the Church.

Thankyou Your Eminence for the kind and surprise visit to your own and beloved Agra Archdiocese. Sweet memories of your short stay with us, must have come back to previous to you. You are always welcome to relax and revive your body and soul. We also get blessed edified with your paternal visit and concern. You are very much loved, and live in our hearts. May God be with you always Your Eminence.

- Fr. Jamilthan, Curia Sercretary

Annual Sports Tournament held in St. Lawrence Seminary, Agra

Agra, 4-6 Nov. We, the Lawrencian family participated in our annual sports tournament. Thus, we throughly enjoyed our Deepawali holidays.

The tournament commenced with the inaugural Holy Mass offered by our guest priest Rev. Fr. Anthony Maria Jude. Rev. Sisters and children from Divya Prabha, Baluganj too joined in our Mass.

After the Mass, we without wasting much time, began our tournament with March Past or Parade. The seminary flag was hoisted by our chief guest. Then he gave us a powerful message, encouraging us to participate in the tournament with fervour and spirit of sportsmanship. We, all were divided in three teams i.e. Lawrencians, Josephites and Paulians. The captains took the oath. Then various sports and competitions i.e. Table Tennis, Brick Walk, Tressure Hunt, Tug-o-War, Relay-Race and Back Walk etc. were conducted. Besides these we had many other interacting sports activities.

We thank and appreciate our beloved vice Rector, Rev. Fr. Louis Xess, for taking the trouble in organizing such a memorable tournament, which we will cherish for a very long time. We thankyou dear Father.

-Bro. Suman Toppo (Beadle), Agra

कृपाओं की माता के आदर में ऊपरी पादरी टोला में रात्रि जागरण आयोजित

आगरा, 13 नवम्बर। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी कोरोना (कोविड-19) एवं डेंगू के संक्रमण के चलते कृपाओं की माता के विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थान सरधना (मेरठ) में विशाल समारोही पवित्र मिस्सा बलिदान

एवं जुलूस आदि की प्रशासनिक अनुमति नहीं मिली, फलतः दूर-दराज से प्रति वर्ष वहाँ महापर्व पर पहुँचने वाले तीर्थयात्रियों को मायूसी का सामना करना पड़ा। काफी समय से विश्वासी वहाँ जाने की तैयारी कर रहे थे, किन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगी। एक अन्य कारण यह भी था, कि 13-14 नवम्बर को देवोत्थान के कारण एक बड़ा सहालग भी था। कहीं भी बसें उपलब्ध नहीं थीं।

कथीड्रल पल्ली स्थित अपर पादरी टोला के मरिया भक्तों ने इसका समाधान ढूँढ निकाला। इसी क्रम में वहाँ के अधिकांश विश्वासियों ने 13 नवम्बर की रात को एक 'मिनि विजिल' (लघु रात्रि जागरण) का आयोजन किया। जागरण रात को 8 बजे प्रारम्भ हुआ। पहले भक्तों ने माता मरियम के आदर में भक्ति गीत एवं भजन गाए। उसके बाद माला विनती जाप किया। सहायक पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर विनिवर्सल डिसूजा ने पवित्र बाइबिल पाठ पढ़ा तथा माता मरियम के सम्बन्ध में एक प्रभावशाली प्रवचन दिया। जागरण रात्रि करीब डेढ़ बजे तक चला। तत्पश्चात स्व-जलपान का आयोजन किया गया था। जागरण का आयोजन रोहित विलियम और उनकी पत्नी काजल के सहयोग से किया गया था। जागरण में डिंपल डेनिस, राकेश विलियम आदि ने भरपूर सहयोग दिया। प्रातः अधिकांश विश्वासियों ने कथीड्रल चर्च में पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लेकर माता मरियम के द्वारा मिली सभी कृपाओं के लिए धन्यवाद दिया।

—ज्योति विलियम, कथीड्रल पल्ली, आगरा

One Day Career Counselling Orientation Organised

Agra. 14 Nov. In order to help and guide our young boys and girls to choose proper career, an orientation camp was organised under the banner of Diocesan Youth Commission, Archdiocese of Agra in St. Peter's College, Agra on Sunday 14 Nov. 2021. The programme was chaired by Most Rev. Dr. Albert D'Souza, Archbishop Emeritus, Agra.

About one hundred students of classes 8-12th benefitted by this camp. Rev. Fr. Dominic George, (DYD) welcomed the participants. His Grace Emeritus inaugurated it with a prayer for the youth.

Rev. Fr. Dominic said that it is very sadening that most of our Catholic youth are unaware about the available courses in various universities. They are confused to choose and persue in their chosen programme.

First session was taken by Group Captain Lt. Jarvis Thomas, who is a member of the Cathedral Parish, and at present posted out at Bhatinda (Punjab). It was a virtual session. In his address to the youth, he motivated and inspired the youth to join the Indian Army. It was followed by the panel discussion, in which Angel Joecy Lakra, Ashish Joseph, Emmanuel Soren, Abhishek Joseph and Ayushi Frank etc. answered and clarified all the queries of the youth.

Later some prominent carrer counselors from St. Xavier's College, Jaipur, Christ University, Delhi alongwith Mr. Jacob Cherian addressed the youth with detailed description and discussion on the ample opportunities and career options. They said that choosing proper course is one of the most important decisions in one's life. Thus, the decision must not be taken under any pressure by parents or peer group. Neither one should follow his/her passion.

-Neeraj Kumar, Ajaynagar (Mathura)

Sr. Sabina DSH celebrated her Silver Jubilee

Kosikalan (Mathura), 6 Nov. Rev. Sr. Sabina DSH of St. Theresa's Convent, Nandgaon Road, Kosikalan, Mahtura celebrated Silver Jubilee of her committed religious life. Due to pandemic protocal, a limited number of religious Sisters and friends were invited for the celebration. To mark the solemnity, a thanksgiving Holy Mass was offered in the Church. The preparation of the Jubilee celebration had begun much earlier. Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, Archbishop of Agra was the main celebrant. Bro. Swapnil Dabre gave a warm welcome to all invitees and threw light on her life sketch. He, in a nutshell highlighted the services rendered by the jubilarin Sr. Sabina. To mark the occasion Rev. Sr. Molly Chacko, companion of Sr. Sabina and Silver Jubilarin was also present for the celebration.

His Grace preached a memorable homily, stating the challenges and difficulties faced by the religious all along their spiritual journey. But the Lord supports and strengthens the called, and looks on them steadily with love and compassion. That's the secret of our religious life. Prior to the Mass, Fr. Mathew Kanjirathinkal gave a short introduction of the Jubilee Mass.

Rev. Fr. Thomas Kumar, Principal of St. Joseph's College, Prayagraj, along with many priests and religious of the Archdiocese participated in the Mass. The choir sang the melodious hymns to sooth the occasion.

After the Mass Sr. Sabina proposed the vote of thanks, acknowledging everyone's role in her life and ministry. Later a jubilee cake was cut and a banquette was served to all guests present.

- Bro. Swapnil Dabre

Christ the King Inter College, Tundla enters into Golden Jubilee Year

Tundla, 13 Nov. This day was marked as a Golden Day of Christ The King Inter College, as the inaugural function of the Golden Jubilee celebration began on that day here in the auditorium of Christ the King Primary School.

The function started with the welcome ceremony of our esteemed guests The Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, the Archbishop of Agra and Archbishop Emeritus Dr. Albert D'Souza, Former

Principals, Vice - Principals, Sisters - in - charge, other Priests, Religious and other dignitaries. Msgr. Thomas K.C. the founder of the school could not be present for the celebration due to his poor health condition and treatment going on. The Most Rev. Dr. Raphy Manjaly lit the lamp and started the inaugural function. Then, the children of our college performed a prayer dance. The Principal Rev. Fr. Jipson Palatty welcomed the gathering. The dignitaries were felicitated with bouquets and saplings. Rev. Sr. Lavanya, our Sister - in - charge conducted the prayer service followed by the Documentary Presentation of our school from beginning till date.

As Jubilee is an event to be cherished for ages so our School Logo of Jubilee year was inaugurated by carrying it in a Royal Palanquin. Then the Jubilee Anthem was sung and it was very well appreciated by everyone. Archbishop Dr. Albert D'Souza gave a special message to the gathering and appreciated the journey of our college.

A Rajasthani Dance was performed by the students for this grand celebration. Our Manager Rev. Fr. Saji (Jacob) Palamattom also shared the words of appreciation. Dr. Sanjeev Jain, the President of the Alumni Association spoke about the good deeds performed by of our college family. A Grand Denouement was performed by the students showing the journey of our college. The Most Rev. Dr. Raphy Manjaly addressed the gathering by saying that we can preserve our future if we look into the past and walk in the present. He also appreciated the hard work of the Christerian Family.

The vote of thanks was proposed by Rev. Fr. Joseph Pasala, Vice - Principal. The programme was concluded with the School Anthem followed by National Anthem.

Mrs. Stella J. Stephen (Teacher)

Pope Francis: Journalism entails embarking on a mission

Pope Francis on 13 Nov. honoured two veteran journalists who report on the Vatican and the Holy See: Valentina Alazraki of Mexico and Philip Pullella, an Italian-born American who works for Reuters news agency.

"We are travelling companions! And today we are celebrating two expert journalists, who have always followed the Popes, the information on the Holy See and more generally the Catholic Church." This is what Pope Francis said about Valentina Alazraki and Philip Pullella, conferring on them the title "Dame' and 'Knight' respectively, of the Grand Cross of the Order of Pope Pius. The awards ceremony took place in the Vatican in the presence of journalists accredited to the Holy See Press Office.

Alazraki who reports for Noticieros Televisa and W Radio, began her journalism career in 1974, during the Pontificate of Saint Pope Paul VI. Pullella, a journalist for some 40 years, has been covering the popes since John Paul II. Before joining Reuters in 1983 he worked for United Press International.

While honouring the two, the Pope said he also wanted "to pay homage" to the entire community of journalists present there saying, "the Pope loves you, follows you, esteems you and considers you are precious".

Courtesy-Vatican News

Feast of St. Jude Celebrated at Jhansi

Jhansi, October 28, 2021 - The Annual Feast of St. Jude, Patron Saint of hopeless cases was celebrated at the world-famous Shrine of St. Jude, Jhansi. The shrine complex was glittering and shining with numerous electric lights. The presence of devotees and pilgrims, gave a festive look. Everywhere there was an atmosphere of joy and festivity.

On the very first day of the nine days' Novena, the festivity commenced with the hoisting of the flag of St. Jude. Every day there were special Masses and Novena prayers, attended by a good number of faithful.

On the eve of the Feast Day, His Lordship Dr. Joseph Kaithathara, Bishop Emeritus of Gwalior, offered the holy Mass. On the Feast Day, Most Rev. Peter Parapullil, Bishop of Jhansi, celebrated the festive Mass. He was accompanied by a good number of diocesan and religious priests. The choir under the guidance of Fr. Joseph Mendonza and others sang melodious hymns. The faithful who were present participated in the solemn Pontifical Mass. In his lovely homily, His Lordship spoke at length on the exemplary life, works, teachings and martyrdom of St. Jude. He very specially interceded to the Patron of Hopeless Cases to plead before the Almighty to save the world from the COVID-19. The Archdiocese of Agra was represented by Fr. Eugene Moon Lazarus.

This year also there was no touching or kissing the relic of the Saint, instead, the Bishop blessed the congregation with the relic.

Rev. Fr. Vincent Akkara, Rector of the Shrine thanked everyone concerned, especially the choir, Parish Council and the Shrine staff who did wonderful work throughout the Novena days, i.e. sanitizing the furniture, congregation, maintaining social distancing and helping the pilgrims in various ways.

Again this year there were no individual healing prayers, confessions, counseling or procession with the Relic in the evening. The langar [free meals] was offered only on the Feast Day. There were frequent Masses with a small number of faithful in attendance.

Fr. Benny and his team did the recording and live telecasting of the entire liturgy of the Novena and the Feast Day. May God bless them.

In the evening of the Feast Day, a Thanksgiving Holy Eucharist was offered at 4:00 p.m., followed by the Adoration and Holy Rosary in the Shrine and a procession was taken out in the Church campus itself.

To conclude the festivity, Most Rev. Peter Parapullil thanked all present and wished them a Happy Feast.

May St. Jude continue to pray for us all.

- Dennis Silvera (Secretary)
Christian Samaj Seva Society, Agra

Prime Minister Narendra Modi invited Pope Francis to visit India

PM Modi was on a two-day visit to Rome for the G20 Summit at the invitation of Italian Prime Minister Mario Draghi.

Prime Minister Narendra Modi has invited Pope Francis to India after a one-on-one meeting in Vatican City on Saturday, 30 Oct. He was accompanied by National Security Advisor Ajit Doval and Foreign Minister Dr S Jaishankar. The meeting was scheduled only for 20 minutes but went on for an hour, news agency PTI reported.

There was no set agenda for the talks with the Pope. "I believe tradition is not to have an agenda when you discuss issues with His Holiness. And I think we respect that. I'm sure the issues that will be covered would cover a range of areas of interests in terms of the general global perspectives and issues that are important to all of us," said Foreign Secretary Harsh Vardhan Shringla.

The Prime Minister interacted with people of various communities, including the Indian community and friends of India from different organisations, in the Italian capital on Friday.

Earlier, PM Modi had paid floral tributes at the bust of Mahatma Gandhi in Rome.

"Had a very warm meeting with Pope Francis. I had the opportunity to discuss a wide range of issues with him and also invited him to visit India," said a tweet from PM Modi's personal account.

PM Modi and the Pope discussed a wide range of issues aimed at making our planet better such as fighting climate change and removing poverty, sources said.

"It may be recalled that the last Papal Visit happened in 1999 when Atal Bihari Vajpayee was the Prime Minister and Pope John Paul II came to India. Now it is during PM Modi's Prime Ministerial term that the Pope has been invited to visit India," sources said. The meeting took place ahead of the delegation-level talks during which they are expected to discuss a range of issues such as COVID-19.

An unnamed source told The Hindu newspaper that the pair discussed ways to tackle poverty and climate change, among other topics.

But there is no indication that religious freedom was addressed at the meeting or late Fr. Stan Swamy's name was mentioned.

The majority of India's population are Hindu. But there are around 24 million Christians in the country - around 2% of the population.

Pope Francis has frequently signalled his desire to visit India. In 2016 he said he was "almost sure" that a trip would be arranged for the following year. But despite his visit to neighbouring Bangladesh and Myanmar, Indian Catholic leaders failed to convince Mr Modi to extend an invitation to the Pontiff.

डॉ. प्रियंका मसीह बनीं सक्षम की प्रांत अध्यक्ष

आगरा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से दिव्यांग बंधुओं की सेवा में कार्य कर रहे संगठन **सक्षम** का डॉ. प्रियंका मसीह को ब्रजप्रांत का अध्यक्ष बनाया गया है।

डॉ. प्रियंका मसीह सेंट जौंस कॉलेज में मनोविज्ञान विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। उन्होंने मनोविज्ञान में पीएचडी भी की है।

Archdiocese at a Glance cont...

Lockdown Khatam... Shadiyaan Shuru (All in Cathedral)

Shivon weds Swarnima, 20.10.2021

Saby weds Mable, 20.10.2021

Stephy weds Sam D'Souza, 25.10.21

First Holy Communion & Confirmation at St. Patrick's & St. Joseph's, G. Noida

St. Jude's Feast in Jhansi

Frs. Dominic George & Moon at Mankameshwar Temple, Agra

Dr. Priyanka appointed Head of Saksham

Holy Souls' Day celebrated at Martyrs' Cemetery, Tota Ka Taal & Goron Ka Kabristan, Agra

Lest we forget...

Sr. Muriel Schooner (Jodhpur)
20.09.2021

Master Austin Lal
S/o Rev. Masih Lal, 27.10.21

Prof. Remy Y. Denis (Gorkahpur)
8.11.21

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Bernardine Jackson, Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Administrator, Staff & ANM Students of

Fatima Hospital

32, M. G. Road, Agra

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com